नकल करो मगर अक्ल से–2

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Nakal Karo Magar Akla Se-2 (Copying-2)
Cover Page picture : Copying
Published under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5
नकल करो मगर अक्ल से–2 7
1 भिखारी और रोटी 9
2 आधा मुर्गा 19
3 दो भाई 34
4 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी 40
5 बिल्लियों की कहानी 49
6 तेरह डाकू 57
7 दो बहिनें 67
8 दो ख़च्चर हॉकने वाले 75
9 दो कुबड़े 83
10 न्यायी और अन्यायी? कौन ज़्यादा अच्छा 88
11 एक लड़का और एक जलपरी 94
12 दो सौतेली बहिनें 104
13 गाय का सिर 126
14 नीच सौतेली माँ 132

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से भी अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

नकल करो मगर अक्ल से–2

"नकल करो मगर अक्ल से" कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जिनमें लोगों ने किसी न किसी की नकल की है और अक्सर उस नकल की वजह से उन्होंने अपनी जान तक गॅवायी है। दुनियॉ में ऐसी कहानियॉ बहुत मिलती हैं क्योंकि दुनियॉ में द्वेष, जलन और लालच बहुत है। लोग एक दूसरे को अमीर हुआ देखते हैं तो वे भी चाहते हैं कि वे भी रात भर में अमीर हो जायें। वे अगर अमीर होते भी हैं तो और ज़्यादा अमीर होना चाहते हैं। सो वे भी उस आदमी की नकल करते हैं पर अपने स्वभाव के कारण मात खा जाते हैं जबकि वह आदमी तो अपने स्वभाव से अमीर बनता है।

इस पुस्तक "नकल करो मगर अक्ल से–1" में हमने कुछ ऐसी ही नकल वाली लोक कथाऐं दी थीं जिन्हें हमने यूरोप महाद्वीप से लिया था। इस पुस्तका के दूसरे भाग में हम अफ्रीका एशिया और अमेरिका की ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं। आशा है कि और दूसरी लोक कथाओं की तरह ये लोक कथाऐं भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और तुमको कुछ शिक्षा देंगीं कि नकल करना बुरा नहीं होता पर उसे अक्ल से करना चाहिये।

1 भिखारी और रोटी[1]

एक बार यूरोप में बहुत ज़ोर से बर्फ पड़ रही थी और बहुत तेज़ ठंडी हवाऐं चल रही थीं। ऐसे मौसम में एक बूढ़ा आदमी एक गॉव में आया।

उसके शरीर पर पूरे कपड़े भी नहीं थे और वह ठंड से थर थर कॉप रहा था। वह हर घर के दरवाजे पर जा कर यह आवाज लगा रहा था — "कोई मेहरबान है जो इस भूखे और सर्दी से ठिठुरते भिखारी को कुछ खाने को दे दे?"

पर सभी दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियॉ बन्द थीं, कोई भी उस बूढ़े की पुकार नहीं सुन रहा था।

चलते चलते अन्त में वह एक बहुत बड़े घर के सामने रुक गया और उस घर का दरवाजा खटखटा कर आवाज लगायी — "मेरे ऊपर दया करो, मैं ठंड से सिकुड़ रहा हूॅ और बहुत भूखा हूॅ।"

दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने झॉका। वह स्त्री खूब गर्म कपड़े पहने हुए थी। उसका रंग गुलाबी था तथा वह किसी बड़े घर की दिखायी देती थी। पर उसकी शक्ल से लगता था कि वह अच्छे स्वभाव की नहीं थी।

[1] The Beggar and Bread – a folktale from Europe

वह उस बूढ़े को झिड़कती हुई सी बोली — "तुम्हें क्या चाहिये? मुझे बहुत काम है।"

बूढ़े ने कहा — "मेरे ऊपर दया करो, मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आयी तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा — "तो क्या वह रोटी मैं तुम्हारे लिये बना रही हूँ? वे रोटियाँ तो केवल मेरे अपने घर के लिये ही काफी हैं इसलिये मैं वे तुम्हें नहीं दे सकती।" और वह दरवाजा बन्द कर के वहाँ से अन्दर चली गयी।

बूढ़ा कुछ पल तो वहाँ खड़ा रहा और फिर वह वहाँ से यह कहता हुआ चला गया — "मैं इस घर को याद रखूँगा।"

फिर वह यह कहता रास्ते पर चलने लगा — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।"

पर ठंड बहुत थी इसलिये सभी घरों के दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियाँ बन्द थीं।

आखिर उसने एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने बाहर देखा। उसने फटे कपड़े पहने हुए थे और उसके पैर भी नंगे थे। लेकिन वह स्त्री बहुत दयालु लग रही थी।

जैसे ही उसने एक बूढ़े आदमी को ठंड से सिकुड़ते हुए देखा तो बोली — "अरे, तुम इस समय बाहर कैसे? आओ आओ, अन्दर

घर में आ जाओ और रसोई में बैठ कर थोड़े गर्म हो लो। बाहर तो बहुत ठंडा है।"

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा और सहारा दे कर उसे रसोईघर में ले गयी। वहीं उसके तीन बच्चे रात का खाना खाने के लिये मेज पर बैठे हुए थे।

उसने बच्चों से कहा — "बच्चों, अजनबी को बैठने के लिये एक कुर्सी दो।" उसके तीनों बच्चे तुरन्त उठे और एक कुर्सी ला कर आग के पास रख दी।

वह बूढ़ा आदमी उस कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथ पॉव गर्म करने लगा। फिर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आई तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने एक लम्बी सॉस ले कर कहा — "अफसोस, मेरे पास यही एक रोटी है। अगर यह रोटी खत्म हो गयी तो हमारे घर में और कुछ खाने को नहीं है।"

बूढ़े आदमी ने फिर कहा — "मैं बहुत भूखा हूँ। मैंने कल रात भी खाना नहीं खाया और न सुबह नाश्ता किया।"

वह स्त्री ज़ोर से अपने बच्चों से बोली — "बच्चों, तुम लोग सुन रहे हो। यह बूढ़ा हमसे भी ज़्यादा भूखा है। हम लोगों ने कम से कम एक रोटी का एक टुकड़ा सुबहे नाश्ते में तो खाया था परन्तु इस बेचारे ने तो कल रात से कुछ भी नहीं खाया। क्या मैं इसको यह रोटी दे दूँ?"

मॉ की यह बात सुन कर बच्चों की ऑखों में ऑसू आ गये क्योंकि उन्होंने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था और इस रोटी को इस अजनबी को देने बाद तो फिर उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचेगा।

परन्तु तीनों बच्चों ने एक साथ कहा — "मॉ, यह रोटी तो इनको मिलनी ही चाहिये क्योंकि ये हमसे ज़्यादा भूखे हैं।"

मॉ ने वह रोटी एक तश्तरी में रखी और अजनबी के सामने रख दी। अजनबी बहुत भूखा था सो उसने वह रोटी तुरन्त ही खा ली। फिर उसने अपना फटा कोट अपने शरीर के चारों ओर कस कर लपेटा और बोला — "मैं इस घर को याद रखूँगा। आपने मेरी इस बुरे समय में बहुत सहायता की है मैं किस प्रकार आपकी सहायता करूँ?"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "मेरे लिये आप भगवान से प्रार्थना करें कि मुझे कल कहीं काम मिल जाये क्योंकि जब तक मुझे कहीं काम नहीं मिलेगा मेरे बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी।"

उस बूढ़े ने कहा — "मैं अभी आपके लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप कल सुबह जो भी काम शुरू करेंगी वह सारे दिन चलता रहेगा।" इतना कह कर वह बूढ़ा उठा और दरवाजा खोल कर बाहर चला गया।

अगली सुबह तीनों बच्चे जल्दी उठ गये और खाने के लिये कुछ मॉगने लगे। उस स्त्री ने एक आह भरी और बोली — "मेरे

प्यारे बच्चों, तुम्हें मालूम है कि घर में जो कुछ भी था वह सब कल रात मैंने उस अजनबी को दे दिया था अब तो घर में कुछ भी नहीं है।

पर हॉ, मेरी टोकरी में एक लाल रंग का कपड़ा पड़ा है। तुम वह ले आओ। उसे बेच कर मैं कुछ खाना खरीद कर लाती हूँ।"

तीनों बच्चे एक साथ बोले — "पर वह तो आपके नये कोट का कपड़ा है मॉ और आपके लिये इस ठंड में कोट बहुत जरूरी है।"

मॉ बोली — "कोई बात नहीं बच्चों, तुम मेरी चिन्ता न करो। अभी तो तुम लोग नापने के लिये गज ले आओ ताकि यह पता चल सके कि वह है कितना।"

एक बच्चा उठा और कपड़ा और गज दोनों ले आया और उस स्त्री ने उस कपड़े को नापना शुरू किया।

"एक गज, दो गज, तीन गज, चार गज, यह क्या? यह कपड़ा तो खत्म होने पर ही नहीं आ रहा और मुझे अच्छी तरह याद है कि यह कपड़ा तीन गज से ज़्यादा नहीं था। अभी कितना और है?

पॉच, छह, सात, आठ गज। यह क्या हो रहा है? नौ, दस, ग्यारह, बारह गज। हे भगवान, हम पर दया करो, यह कपड़ा तो खत्म ही नहीं हो रहा। तेरह गज, चौदह गज... ।"

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कपड़ा अनगिनत गज लम्बा हो गया हो और खत्म होने पर ही न आ रहा हो। उसने सुबह यह काम शुरू किया था और दोपहर तक उसका वह छोटा सा कमरा उस लाल कपड़े के ढेर से भर गया।

बच्चे खुशी से बाहर भागे और पड़ोसियों को खबर दी। पड़ोसी भी इस जादू को देखने आये और कपड़े के ढेर को देख कर आश्चर्य से बोले — "अरे तुम्हें इतना कपड़ा कहॉ से मिला?"

स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया और उसके हाथ कपड़ा नापते रहे और नापते रहे। और यह काम सूरज डूबने तक चलता रहा और चलता रहा। उस समय तक उसकी छोटी सी झोंपड़ी उस खूबसूरत लाल कपड़े से भरी पड़ी थी।

अब वे लोग गरीब नहीं रहे। उस लाल कपड़े को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया।

ऐसी बातें छिपी नहीं रहतीं। यह खबर उस बुरे स्वभाव वाली स्त्री के पास भी पहुॅची जिसने उस बूढ़े को उस रात दुतकार कर भगा दिया था।

उसने सोचा — "ओह, लगता है वह बूढ़ा आदमी कोई जादूगर था। अगर मैं उसे उस दिन न भगा देती तो वह मुझसे भी यही कहता कि कल सुबह तुम जो काम भी शुरू करोगी वह सारा दिन चलता रहेगा।

अगर अबकी बार वह इधर आया तो मैं उसे जितनी रोटी की जरूरत होगी उतनी दे दूँगी और फिर मैं देखती हूँ कि गॉव में सबसे अमीर कौन होता है।"

अब उसके दरवाजे और खिड़कियॉ हमेशा खुली रहतीं और वह भी सड़क पर हर आने जाने वाले पर नजर रखती। ठंड अभी भी बहुत थी पर धन के लोभ में वह अब अपने घर के दरवाजे खिड़कियॉ बन्द ही नहीं करती थी।

आखिरकार एक शाम उसको उस बूढ़े की आवाज सुनायी दी — "कोई दयालु है जो मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे और सर्दी से ठिठुरते भिखारी को खाना दे।"

वह स्त्री तो इस ताक में ही बैठी थी कि कब वह भिखारी आये और कब वह उसको खाना खिलाये।

सो जैसे ही उसने उस भिखारी की आवाज सुनी उसने तुरन्त ही उसको बुलाया और कहा — "आओ आओ, अन्दर आ जाओ। इसे अपना ही घर समझो। यह लो इस कुर्सी पर बैठो और एक प्याला चाय पी कर थोड़ा गर्म हो लो। बोलो मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

वह बूढ़ा कुर्सी पर बैठ गया और चाय पीता हुआ बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ रोटी की खुशबू आयी तो इधर चला आया।"

"अरे तुम भूखे हो? यह लो रोटी, सब्जी, दाल, चटनी आदि और जितना चाहे उतना खाओ। चाहे मैं भूखी रह जाऊँ परन्तु मैं तुम्हें रोटी जरूर खिलाऊँगी।"

उस रात बूढ़े ने बहुत अच्छा खाना खाया। खाना खा कर वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। मैं इस घर को याद रखूँगा।"

स्त्री ने उत्सुकता से कहा — "और क्या?"

बूढ़ा मुस्कुरा कर बोला — "मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो भी काम तुम कल सुबह शुरू करो वह सारा दिन चले।" यह कह कर वह बूढ़ा चला गया।

जब वह बूढ़ा चला गया तो वह स्त्री खुशी से चीख पड़ी — "ओह, अब मैं क्या करूँ? हाँ, मैं कल सुबह से पैसे गिनना शुरू करती हूँ ताकि मेरा वह काम शाम तक चलता रहे।

पर मैं इतने सारे पैसे रखूँगी कहाँ? मुझे उनको रखने के लिये पहले से ही कुछ थैले बना लेने चाहिये। मैं कुछ कपड़ा काट लूँ, रात भर में मैं उस कपड़े से कुछ थैले सिल लूँगी, और सुबह तक वे मेरे पैसे रखने के लिये तैयार हो जायेंगे।"

उसने एक कैंची ली और कुछ कपड़ा पास में रख लिया और थैले बनाने लगी। वह रात भर इसी काम में लगी रही। पहले वह थैले का कपड़ा काटती और फिर उसको सिलती। यह सब करते करते कब सुबह हो गयी उसको पता ही नहीं चला।

एकाएक उसको लगा कि उसकी कैंची तो रुक ही नहीं रही थी। वह उसे रख भी नहीं पा रही थी बल्कि एक प्रकार से कैंची उसके हाथ से कह रही थी कि मुझे चलाओ।

यह महसूस होते ही वह तो घबरा गयी — "ओह, यह क्या हो रहा है? यह तो मेजपोश कटा जा रहा है। कैंची, रुक जाओ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी वह तो बस कपड़ा काटती ही जा रही थी, काटती ही जा रही थी।

वह स्त्री घबराहट में चिल्लायी — "ओ कैंची, रुक जाओ। अरे, मेरी कुरसी की गद्दियॉ परदे चादर सभी कट गये हैं। अरे कालीन भी, तकिये के गिलाफ भी। हे भगवान, अब मैं क्या करूँ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और घर में जो कुछ भी था वह सब काटती जा रही थी। इतने में ऊपर से उसका पति आया तो कैंची ने उसका कोट भी काटना शुरू कर दिया।

वह अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "यह सब तुम क्या कर रही हो? यह मेरा कोट क्यों काट रही हो? रखो कैंची नीचे।"

स्त्री रोती सी बोली — "मैं नहीं रख सकती। मुझसे यह कैंची रखी ही नहीं जा रही।"

खच खच खच, अब कैंची उसके पति की कमीज काट रही थी, फिर मोजे, फिर जूते। सुबह, दोपहर, शाम कैंची चलती रही और चलती रही और जब तक चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। और घर में जब सब कुछ कट गया तब कहीं जा कर वह कैंची रुकी।

दूर कहीं से उस स्त्री ने आवाज सुनी कोई बूढ़ा आवाज लगा रहा था — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।"

2 आधा मुर्गा[2]

यह मज़ेदार लोक कथा यूरोप महाद्वीप के अल्बेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बुढ़िया चिल्लायी — "ओ आलसी बुड्ढे, अगर तुम इतने आलसी नहीं होते तो शायद हम लोग किसी अच्छे घर में रह रहे होते और हमारे पास बहुत सारा खाना होता। मैं गरीब होने से तो तंग हूँ ही और साथ में तुमसे भी।"

उधर वह बूढ़ा भी अपने आपको आलसी सुनते सुनते तंग आ गया था। असल में तो वह अपने आपको केवल आलसी सुनते सुनते ही नहीं बल्कि अपनी पत्नी की आवाज से ही तंग आ गया था।

सो वह अपनी पत्नी से बोला — "अगर तुम मुझसे इतनी ही तंग हो तो हमारे पास जो कुछ भी है उसका आधा आधा बॉट लो और यहॉ से खिसको।"

बुढ़िया चिल्ला कर बोली — "वाह, यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। यह तो आज तुमने सालों में पहली बार कोई काम की बात की है।"

---

[2] Half Rooster - a folktale from Albania, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/albania/albania_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin

उन बूढ़े और बुढ़िया के लिये घर की चीज़ों को आधा आधा बॉटना कोई मुश्किल काम नहीं था। उनके पास एक बिल्ला था और एक मुर्गा था। बुढ़िया ने बिल्ला उठाया और दरवाजे में से तूफान की तरह से बाहर निकल गयी।

उसने सोचा — "कम से कम यह बिल्ला मेरे लिये चिड़ियें तो पकड़ेगा और मैं कुछ पका पाऊँगी। यह मुर्गा तो न कुछ पकड़ सकता है और न ही अंडे दे सकता है।"

इस मामले में वह बुढ़िया ठीक सोचती थी। बुढ़िया के जाने के बाद तो अब उसके पति के पास तो खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था।

एक दिन पति इतना ज़्यादा भूखा था कि उसको अपने मुर्गे से कहना पड़ा — "मेरे दोस्त, मुझे बहुत अफसोस है पर मेरे पास अब और कोई चारा नहीं है और मुझे आज तुमको खाना पड़ रहा है।"

मुर्गा बोला कि वह समझ गया। पर बूढ़े की बात उसको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगी पर वह क्या करता। उसका मालिक तो वह बूढ़ा ही था न। सो बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी से मुर्गे को बीच में से काट दिया।

अब उसने आधा मुर्गा तो पका कर खा लिया और दूसरा आधा अपने पालतू की तरह से रखा रहने दिया। उस दिन से लोग उसको आधा मुर्गा पुकारने लगे।

उस आधे मुर्गे के लिये एक टॉग पर इधर से उधर कूदते रहना कोई मुश्किल काम नहीं था। पर वह इतना जरूर जान गया था कि अगर वह इस भूखे बूढ़े के साथ रहा था तो एक दिन वह फिर भूखा हो जायेगा और उस बचे हुए आधे को भी खा जायेगा।

सो उसने सोचा कि अब उसको दुनियॉ में कहीं बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। उसने यह भी सोचा जब मैं काफी सोना कमा लूँगा तब मैं अपने घर फिर वापस आ जाऊँगा।

सो यही सोच कर वह घर से बाहर निकल गया और कूद कूद कर एक तालाब के किनारे पहुँच गया। वहॉ उसने देखा कि उसका दोस्त मेंढक लिली के एक पत्ते पर बैठा हुआ है

वह उससे चिल्ला कर बोला — "मैं अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ। मुझे मशहूर होना है और तुम क्योंकि मेरे दोस्त हो तो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते हो?"

मेंढक को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह बोला — "चलो चलो यह तो बड़ा अच्छा है। दोनों मिल कर दुनियॉ देखते हैं। दोनों थोड़ा आनन्द लेते हैं। दो दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

यह कह कर मेंढक अपने लिली के पत्ते से कूद कर पानी में तैरता हुआ किनारे पर आ गया। वह मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर आराम से बैठ गया।

आधे मुर्गे ने अपनी यात्रा जारी रखी। कूदते कूदते मुर्गे को एक लोमड़ा मिला। हालॉकि लोमड़ा काफी ऊपर एक चट्टान पर बैठा हुआ था फिर भी उसने मुर्गे के पंख में से बाहर निकलती एक हरे रंग की टॉग देख ली।

लोमड़ा बोला — "क्या यह मेंढक है जो तुम्हारे पंख के नीचे छिपा बैठा है? तुम लोग क्या करने जा रहे हो?"

आधे मुर्गे ने चट्टान के ऊपर बैठे लोमड़े को देखा और कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी — "मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ लोमड़े भाई। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते, आओ न?"

उस आधे मुर्गे को लोमड़े को भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं पड़ी। लोमड़ा बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। तीन दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

सो लोमड़ा भी अपनी चट्टान से कूद कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधे मुर्गे ने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी। चलते चलते वह एक गुफा के पास आ गया। वहॉ उसने देखा कि पीली ऑखों की एक जोड़ी उसको घूर रही है।

वे ऑखें किसी को भी डरा सकती थी पर आधे मुर्गे को नहीं। वे ऑखें उसके दोस्त भेड़िये की थीं। उस गहरी गुफा में अपने घर

से भेड़िये ने देखा कि आधे मुर्गे के पंखों में से हरे और लाल रंग का मॉस झॉक रहा है।

यह देख कर भेड़िया मुस्कुरा दिया और मुर्गे से पूछा — "अरे ओ आधे मुर्गे, तुम ये लोमड़े और मेंढक को अपने पंखों में छिपाये क्या कर रहे हो?"

आधे मुर्गे ने गुफा के अँधेरे में झॉका और बोला — "कुकडूँ कू, ओ भेड़िये भाई, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

भेड़िये को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह भी अपनी गुफा से बाहर निकल आया और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। चार दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

उसकी पीली ऑखें दिन के उजाले में इतनी भयानक दिखायी नहीं दे रहीं थीं जितनी कि उस गुफा के अँधेरे में। सो भेड़िया भी अपनी गुफा से निकल कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला। अब वह एक जानवर रखने के बाड़े के पास आ गया।

वहॉ उसने एक गुलाबी नाक भूसे में से बाहर निकली हुई देखी। वह पहचान गया कि वह नाक उसके प्यारे दोस्त चूहे की है।

चूहा उस भूसे के ढेर में से बाहर निकल कर आया और आधे मुर्गे के फूले हुए पंखों की तरफ घूरा और बोला — "अगर मैं गलत नहीं हूॅ तो तुम्हारे पंखों के नीचे मेंढक, लोमड़ा और भेड़िया हैं। तुम सब यहॉ क्या कर रहे हो भाई लोगों?"

आधे मुर्गे ने भूसे से निकले हुए अपने दोस्त चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुॅकडू कू, प्यारे चूहे, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूॅ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूॅ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

चूहे को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने अपने बाड़े में भूसा छोड़ा और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। पॉच दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

वह भी आराम से एक जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर। पर अब वहॉ उस पंख के नीचे किसी और दोस्त के लिये कोई जगह नहीं थी।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला।

एक दिन दोस्तों की यह मंडली एक सब्जी के बागीचे से गुजरी। सब सब्जियॉ तोड़ने लायक थीं और आधे मुर्गे को भूख लगी थी। वह चिल्लाया – "कुकडूँ कू, देखो कितना सारा खाना और यह सब केवल मेरे लिये है।"

पर उस बगीचे का मालिक तो वैसा नहीं सोचता था और उस बगीचे का मालिक था वहॉ का राजा। राजा ने अपने नौकरों को उस मुर्गे को पकड़ने का हुक्म दे दिया। उसने अपने नौकरों से कहा कि वह आधा मुर्गा जरूर है पर देखने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है।

नौकर उस मुर्गे को पकड़ने दौड़े और वह मुर्गा उनसे बचने के लिये भागा। इस भाग दौड़ में राजा के बहुत सारे बढ़िया टमाटर कुचल गये।

नौकरों के भारी जूतों के नीचे आ कर राजा की स्ट्रौबैरी[3] की क्यारियॉ की क्यारियॉ बर्बाद हो गयीं।

जब बन्द गोभी का आखिरी पौधा कट गया तभी कहीं जा कर वह मुर्गा पकड़ा जा सका। राजा ने चिल्ला कर

कहा — "इस मुर्गे को सूप बनाने वाले बर्तन में डाल दो। और उसमें कुछ टमाटर और एक बन्द गोभी डालना मत भूलना।"

[3] Strawberry – berry is a kind of wild fruit, normally without seed. There are several types of berries – strawberries, blue berries, black berries, cranberries etc. See its picture above.

आधे मुर्गे को पता चल गया कि वह तो बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया है। नीचे आग की लपटें उठ रही थीं और बर्तन का पानी बहुत ज़ोर से गर्म होता जा रहा था।

आधे मुर्गे ने मेंढक की तरफ देखा और चिल्लाया — "कुकडूँ कू, अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। मेंढक, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

मेंढक को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने उस बर्तन का सारा पानी पी लिया और बाकी जो कुछ उसमें बचा उसे उसने बर्तन उलटा कर के आग के ऊपर डाल दिया जिससे वह आग पूरी तरीके से बुझ गयी।

गीला सा मुर्गा उस बर्तन में से बाहर निकल आया और कूद कर बाहर भाग गया।

पर वह राजा को नौकरों से बच नहीं सका। वे उसके लिये बहुत तेज़ थे। उन्होंने तुरन्त ही उस मुर्गे को फिर से पकड़ लिया और अबकी बार उसे मुर्गे के बाड़े में फेंक दिया।

यहॉ भी आधा मुर्गा मुसीबत में था। यहॉ की मुर्गियॉ बहुत अच्छे स्वभाव की नहीं थीं। वे कभी भी उसको चोंच मार सकती थीं। और अगर एक बार उन्होंने उसको चोंच मारना शुरू कर दिया तो बस फिर तो वे उसको मार कर ही छोड़तीं।

सो मुर्गे ने लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कू, अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ लोमड़े, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

लोमड़े को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने अपने होठ चाटे और उन मुर्गियों की तरफ देख कर मुस्कुराया। पर वे मुर्गियॉ भी बेवकूफ नहीं थीं। उनको मालूम था कि लोमड़े को मुर्गियॉ खाना कितना पसन्द था।

इससे पहले कि लोमड़े की मुर्गियों की दावत हो मुर्गियों ने बाड़े की चहारदीवारी में एक बड़ा सा छेद बना लिया जिसमें से वे सब निकल कर भाग गयीं और साथ में आधा मुर्गा भी।

पर एक बार राजा के नौकरों ने आधे मुर्गे को फिर से पकड़ लिया। इस बार उन्होंने उसे राजा के घोड़ों के अस्तबल में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि ये घोड़े इसको अच्छा सबक सिखायेंगे।

एक बार फिर मुर्गे को पता चल गया कि वह बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस गया है। घोड़ों के खुर उसके पास आते जा रहे थे। किसी भी समय वे उसको कुचल कर मार सकते थे।

इस बार उसने भेड़िये की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कू, अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। भेड़िये, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

भेड़िये को मालूम था कि उसको क्या करना है। वह तो उसकी सहायता करने के लिये बड़ी खुशी से तैयार था। उसका तो मजा

आ गया था। वह तुरन्त अस्तबल में घुसा और घोड़ों के ऊपर टूट पड़ा।

पर कोई भी घोड़ा भेड़िये का शिकार नहीं होना चाहता था सो उन्होंने अपने अस्तबल के चारों तरफ लगी बाड़ तोड़ी और निकल कर भाग गये। और उनके साथ साथ भाग गया आधा मुर्गा भी।

पर राजा के नौकर भी उसको छोड़ नहीं रहे थे। एक बार फिर उन्होंने उस मुर्गे को पकड़ लिया पर इस बार वे नहीं सोच पाये कि वह इस मुर्गे का क्या करें।

सो राजा ने उनको सलाह दी कि वे उसको उस बक्से में बन्द कर दें जिसमें सोना रखा था। वह बोला — "ज़रा ध्यान रखना कि वह बक्सा सबसे ज़्यादा मजबूत हो।" सो उसके नौकरों ने यही किया।

मुर्गा एक बार फिर से बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया था। अगर वह इस बक्से में से समय से बाहर नहीं निकला तो वहॉ तो वह भूखा ही मर जायेगा। और वह जानता था कि राजा उसको उस बक्से में वहॉ बहुत देर तक रखने वाला था।

सो उसने चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कू, अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ चूहे, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

और चूहे को भी पता था कि उसको क्या करना था। वह बोला — "मुझे इस बक्से में इधर उधर घूमने के लिये थोड़ी सी जगह चाहिये। क्या तुम इसमें से थोड़ा सा सोना निगल सकते हो?"

आधा मुर्गा जानता था कि वह यह काम कर सकता था। वह चूहे की सहायता करना चाहता था। सो उसने उस बक्से का करीब करीब सारा सोना निगल लिया।

अब चूहे ने लकड़ी के बक्से को काटना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में उसने उस बक्से में इतना बड़ा छेद कर दिया जिसमें से वे दोनों भाग सकते थे।

इस समय वहॉ पर कोई नौकर नहीं था। क्योंकि किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि मुर्गा उस बक्से में से निकल जायेगा सो किसी ने उसकी पहरेदारी करने की भी कोशिश नहीं की।

आधे मुर्गे ने ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने सोने के बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किये और कूद कर उस बक्से में से निकल कर भाग गया।

इस भागने में उसका कुछ सोना रास्ते में गिर गया पर उसकी चिन्ता करने का उसके पास समय नहीं था। उसको तो बस राजा से बचना था और अपने घर पहुॅचना था।

जब वह घर पहुॅच गया तो उसको मालूम था कि उसके अब घूमने के दिन गये। वह अपने मालिक की तरफ दौड़ा और उससे

लिपटने के लिये अपने पंख फैला दिये। वह बूढ़ा अपने पुराने दोस्त को वापस आया देख कर बहुत खुश हुआ।

वह और भी खुश हुआ जब उसने सोने के कुछ टुकड़े आधे मुर्गे के पंखों के नीचे देखे।

"ये तुमको कहाँ से मिले?" उसने पूछा।

आधा मुर्गा मुस्कुरा कर बोला — "यह एक लम्बी कहानी है।"

बूढ़ा बोला — "चलो, ये हमारे कुछ दिन के खाने के लिये काफी हैं। मैं अभी बाजार जाता हूँ और हमारे लिये खाना खरीद कर लाता हूँ।"

मुर्गा बोला — "जब तक तुम यह सब करते हो तब तक तुम मुझे कुछ भूसा दे दो ताकि मैं उस पर आराम से सो सकूँ। मैं बहुत थक गया हूँ।"

"जो तुम चाहो, ओ आधे मुर्गे।"

जब उस बूढ़े ने सारा सोना खर्च कर दिया तो आधे मुर्गे ने उससे कहा कि वह चिन्ता न करे। अगर वह उसको झाड़ू से मारेगा, बहुत ज़ोर से मारने की जरूरत नहीं है केवल धीरे से ही मारने की जरूरत थी तो वह सोने का एक टुकड़ा उगल देगा जो उन लोगों के कई दिन के खाने के लिये काफी होगा।

और फिर यही हुआ। जब भी उनकी रसोई की आलमारियाँ खाली होतीं तो वह बूढ़ा अपनी झाड़ू उठाता, मुर्गे को मारता और कुछ सोना निकाल लेता।

अब आधे मुर्गे के पास भी खाने के लिये खूब सारा खाना था और सोने के लिये आरामदेह बिस्तर। अब बूढ़े की ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी हो गयी थी।

वे अपने घर में खुश थे और अक्सर अपने दोस्तों को शाम को खाने पर बुलाते थे जिनमें मेंढक, लोमड़ा, भेड़िया और चूहा भी शामिल थे।

पर कहानी के आखीर में सारे लोग खुश नहीं थे। बुढ़िया इस सबसे बहुत गुस्सा थी। वह केवल गुस्सा ही नहीं थी वह बूढ़े से जल भी रही थी। वह रो रही थी — "मैंने बिल्ले को क्यों लिया, मुर्गे को क्यों नहीं? यह सब सोना तो मेरे पास होना चाहिये था।"

और फिर एक दिन उसने एक प्लान बनाया। उसने अपनी झाड़ू उठायी और बिल्ले को घर से बाहर निकाल दिया — "ओ आलसी जीव, जा दुनियॉ में बाहर जा और सोना ढूँढ कर ला। और तब तक वापस मत आना जब तक हमारे पास खाने के लिये काफी न हो जाये। तू सुन रहा है न?"

बिल्ले ने ठीक सुना और बाहर चल दिया। रास्ते में उसको सोने का एक टुकड़ा मिल गया जो आधे मुर्गे से आते समय गिर गया था। उसने उसको तुरन्त ही निगल लिया पर उसको और सोना कहीं नहीं मिला।

सो उसने अपना पेट सॉप, चुहिया, बालों वाले मकड़े आदि जानवरों से भर लिया। जब वह उन्हें और नहीं निगल सका तो वह घर वापस आ गया।

बुढ़िया अपने बिल्ले के देख कर बहुत खुश हुई — "अरे तू तो अपना पेट भर कर बड़ी जल्दी वापस आ गया। मैं ज़रा अपनी झाड़ू ले आऊँ।"

वह जल्दी जल्दी अन्दर गयी और झाड़ू ले कर आयी और उससे बिल्ले को जरूरत से भी ज़्यादा ज़ोर से मारने लगी। फिर भी बिल्ले ने सोने का एक टुकड़ा उगल दिया। सोना देख कर वह बहुत खुश हुई पर एक टुकड़ा तो उसके लिये काफी नहीं था सो उसने बिल्ले को दूसरी बार मारा।

दूसरी बार के मारने से उसमें से एक सॉप लहराता हुआ निकल आया और उस बुढ़िया के जूते की तरफ भागा। वह चिल्लायी और उसने बिल्ले को और ज़ोर से मारा। फिर तो उसके पेट से चुहिया और बालों वाले मकड़े निकल पड़े।

वह चिल्लायी — "यह सब क्या है? यह तूने क्या किया?"

जितनी बार वह गुस्से से बिल्ले को मारती गयी उतनी ही बार वह बिल्ला जानवर उगलता गया। इस तरह कमरे में बहुत सारे जानवर इकट्ठा हो गये।

जब उस बुढ़िया ने उस बिल्ले को आखिरी बार मारा तो बड़े बालों वाला एक बहुत बड़ा मकड़ा निकल आया। वह बहुत ही

गुस्सा था सो वह उस बुढ़िया की तरफ दौड़ा। वह बुढ़िया को जंगल तक खदेड़ कर ले गया और फिर किसी ने उन दोनों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना।

अगर तुममें से किसी को उन दोनों के बारे में पता चल जाये तो उनसे सावधान रहना क्योंकि दोनों ही बहुत खतरनाक हैं।

बिल्ला बूढ़े और मुर्गे के पास वापस आ गया और बाकी ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

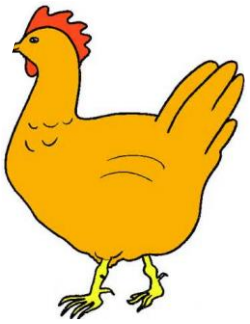

3 दो भाई[4]

एक बार की बात है कि एक जगह दो भाई रहा करते थे। दोनों के पास दस दस डबल रोटियॉ थीं। उन्होंने सोचा कि चलो बाहर चल कर अपनी अपनी किस्मत आजमाते हैं। बस वे उठे और उठ कर चल दिये।

कुछ दूर चलने के बाद उनको भूख लग आयी सो एक भाई ने दूसरे भाई से कहा — "पहले हम तुम्हारी रोटी खाते हैं। उसके बाद हम लोग मेरी रोटी खायेंगे।"

दूसरा भाई इस बात पर राजी हो गया सो दोनों भाइयों ने मिल कर पहले दूसरे भाई की डबल रोटी खायी और खा पी कर वे फिर अपने रास्ते चल दिये। इसी तरह से वे चलते रहे और दूसरे भाई की दसों रोटियॉ खत्म हो गयीं।

रोटी खत्म होने के बाद पहला भाई बोला — "भाई अब तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने रास्ते जाता हूँ। तुम्हारे पास अब कोई रोटी नहीं बची है और मैं तुम्हें अपनी रोटी खाने नहीं दूँगा।"

ऐसा कहते हुए वह अपने भाई को अकेले सफर करने के लिये छोड़ वहॉ से चल दिया। वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में एक मिल के पास आ निकला।

---

[4] The Two Brothers (Tale No 9) – a folktale from Georgia, Europe.
From "Georgian Folk Tales" Tr by Marjorie Wardrop. 1894. Hindi translation of this book is availablr from hindifolktales@gmail.com .

वह मिल वाले से मिला और बोला — "भगवान के लिये मुझे आज रात के लिये यहाँ ठहरने दो।"

मिल वाले ने कहा — "ठहरने को तो तुम यहाँ ठहर सकते हो पर यहाँ पर रात को बहुत मुश्किल होती है। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं भी यहाँ पर रात को नहीं रहता। मैं भी सोने के लिये दूसरी जगह जाता हूँ। क्योंकि अभी यहाँ जंगल में जंगली जानवर निकल आयेंगे और शायद वे फिर यहाँ भी आ जायेंगे।"

पहला भाई बोला — "तुम मेरे लिये बिल्कुल मत डरो। मैं यहीं ठहरूँगा। जानवर मुझे नहीं मार सकते।"

मिल वाले ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह वहाँ ठहर कर अपनी ज़िन्दगी खतरे में न डाले पर जब उसने देखा कि उसकी बात का उसके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा तो वह उठा और अपने घर चला गया। और पहला भाई वहीं मिल में चला गया और सो गया।

अब न जाने कहाँ से एक बड़ा भालू वहाँ आ गया। उसके पीछे एक भेड़िया और एक गीदड़ भी आये। उस मिल में आ कर वे तीनों बहुत शोर मचाने लगे। फिर वे कूदने लगे जैसे कि वे सब नाच रहे हों।

यह सब देख कर पहला भाई बहुत डर गया और डर के मारे काँपने लगा। वह एक तरफ को लेट गया और डर के मारे कुछ कुछ बोलने लगा।

आखिर भालू बोला — "चलो हम सब एक दूसरे को वह सुनाते हैं जिसने जो देखा हो या जो सुना हो।"

पर भेड़िया और गीदड़ बोले — "हॉ हॉ हम सब सुनायेंगे पर पहले तुम शुरू करो।"

सो भालू ने सुनाना शुरू किया — "एक पहाड़ी पर जिसको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ एक चूहा रहता है। इस चूहे के पास बहुत सारा पैसा है। जब धूप निकलती है तब वह उसे वह धूप में फैला देता है।

अगर कोई इस चूहे का बिल जानता हो और वहॉ किसी धूप वाले दिन जाये जब उसने अपना पैसा फैला रखा हो और उस चूहे को डंडे से मार दे तो वह बहुत अमीर हो जाये।"

भेड़िया बोला — "हॉ यह तो है। पर यह तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई। मैं एक ऐसे शहर को जानता हूँ जहॉ कोई पानी नहीं है। वहॉ बहुत थोड़ा सा पानी भी लोग बहुत दूर दूर तक ले जाते हैं। और उसकी उनको बहुत कीमत देनी पड़ती है।

पर वहॉ के लोग यह नहीं जानते कि शहर के बीचोबीच एक पत्थर के नीचे बहुत सुन्दर शुद्ध पानी है। अगर कोई भी इस बात को जाने और उस पत्थर को वहॉ से हटा दे तो वह तो बहुत अमीर हो जायेगा और शहर के सब लोगों को पानी भी मिल जायेगा।"

गीदड़ बोला — "यह तो कुछ भी नहीं। मैं एक ऐसे राजा को जानता हूँ जिसके एक अकेली बेटी है। वह तीन साल से अपंग पड़ी

है पर कोई यह नहीं जानता कि उसकी दवा क्या है। जबकि उसकी बीमारी का एक बड़ा सादा सा इलाज है।

अगर कोई उसको बीच पेड़ की पत्तियों के पानी से नहला दे तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। अब सोचो अगर कोई उसको ठीक कर देगा तो वह कितना मालामाल हो जायेगा। पर कोई इस बात को जाने तब न।"

जब उन्होंने सबने अपनी अपनी कहानियॉ सुना कर खत्म कीं बस तभी दिन की पहली रोशनी फूटने लगी। यह देख कर भालू भेड़िया और गीदड़ तीनों वहॉ से जंगल में चले गये।

पहला भाई मिल में से बाहर निकला भगवान को धन्यवाद दिया और उस पहाड़ी की तरफ चल दिया जिस पर वह अमीर चूहा रहता था जिसके बारे में भालू बोला था।

वह उस पहाड़ी पर आया तो उसे पता चला कि उसकी कहानी तो सच्ची थी। वहॉ वह चूहा भी था और उसने अपना पैसा भी धूप में फैला रखा था।

बस वह एक डंडा ले कर उधर बिना आवाज किये चला गया और मौका मिलते ही चूहे को मार दिया। फिर उसने वहॉ से सारा पैसा इकट्ठा किया और पहाड़ी से नीचे चला आया।

वहॉ से वह फिर बिना पानी वाले शहर में गया। वहॉ आ कर उसने शहर के बीच में रखा वह पत्थर हटाया जिसके नीचे पानी था। पत्थर हटाते ही वहॉ से तो पानी की धारा बह निकली। पानी

देखते ही शहर वाले बहुत खुश हो गये और उसको इनाम में बहुत कुछ दिया।

अब वह सब ले कर वह उस शहर पहुँचा जिस देश के राजा की बेटी तीन साल से बीमार थी। उसने राजा से कहा — "अगर मैं आपकी बेटी को ठीक कर दूँ तो आप मुझे क्या देंगे।"

राजा बोला — अगर तुम मेरी बेटी को ठीक कर दोगे तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा।"

यह सुन कर पहले भाई ने दवा तैयार की राजकुमारी को उस पानी से नहलाया और वह ठीक हो गयी। राजा बहुत खुश हुआ उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी।

अब यह कहानी दूसरे भाई के पास पहुँची कि उसका भाई अमीर हो गया तो वह अपने भाई से मिलने चल दिया। चलते चलते वह अपने भाई के पास आ पहुँचा। उसने अपने भाई से पूछा — "यह सब कैसे हुआ भाई ज़रा मुझे भी तो बताओ।"

पहले भाई ने उसको सब कुछ विस्तार में बता दिया तो दूसरे भाई ने कहा — "मैं भी वहाँ जाता हूँ और उस मिल में एक दो रात रुकूँगा।"

उसके भाई ने उसको बहुत समझाया कि वह ऐसा न करे पर वह नहीं माना सो पहला भाई बोला — "अगर तुम नहीं मानते तो जाओ पर मैं तुम्हें फिर चेतावनी दे रहा हूँ कि तुम वहाँ मत जाओ। क्योंकि तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है।"

पर वह नहीं माना और वहॉ चला गया। वह मिल में जा कर छिप गया और वहॉ सारी रात रहा।

रात को न जाने कहॉ से फिर से वे ही पुराने जानवर वहॉ आ पहुँचे – भालू भेड़िया और गीदड़। भालू बोला — "उस दिन मैंने तुमको जो चूहे की कहानी सुनायी थी उस चूहे को किसी ने मार दिया और उसका सारा पैसा ले गया। क्योंकि अब न तो वहॉ पर वह चूहा है और न ही उसका पैसा।"

भेड़िया बोला — "और मैंने जिस शहर के बारे में तुम लोगों को बताया था कि वहॉ पानी नहीं है वहॉ किसी ने जा कर वह पत्थर उठा दिया है और अब तो वहॉ पानी धड़ाके से बह रहा है।"

गीदड़ बोला — "और मैंने तुम लोगों को जिस बीमार राजकुमारी के बारे में बताया था वह अब ठीक भी हो गयी है और उसकी शादी भी हो गयी है।"

भालू बोला — "इससे ऐसा लगता है जैसे उस दिन कोई हमारी बात सुन रहा था। हो सकता है वह अभी भी यहीं हो।

सब बोले — "तब हमको उसे चल कर देखना चाहिये। फिर उसके बाद हमारी बातें कोई नहीं सुनेगा।"

वे सब इधर उधर देखने चले गये। उन्होंने चारों तरफ देखा तो उनको यह दूसरा भाई दिखायी दे गया। बस उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसको फाड़ कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये।

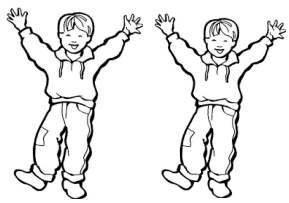

4 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी[5]

एक बार की बात है कि आयरलैंड के एक गॉव में हडिन, डडिन और डोनाल्ड[6] नाम के तीन आदमी पास पास रहते थे।

तीनों के पास अपने अपने बैल थे, अपने अपने खेत थे और वे अपनी अपनी खेती करते थे। डोनाल्ड अपने खेत में बहुत मेहनत करता था और उसकी फसल भी बहुत अच्छी होती थी इसलिये धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

हडिन और डडिन से उसकी अमीरी देखी नहीं गयी और एक दिन उन्होंने डोनाल्ड के एक बैल को मार दिया। डोनाल्ड बहुत दुखी हुआ पर कुछ कर नहीं सकता था। इसलिये सब्र कर के उसने अपने मरे हुए बैल की खाल निकाली और उसे कन्धे पर रख कर बाजार में बेचने चल दिया।

रास्ते में एक मैना[7] उस बैल की खाल पर आ कर बैठ गयी और उस खाल में लगा मॉस खाने लगी। साथ में वह डोनाल्ड से बातें भी करती जाती थी।

क्योंकि वह आदमी की आवाज में उससे बात कर रही थी तो उसको लगा कि उसको उसकी कुछ बातें समझ में आ रही हैं सो

[5] Donald and His Neighbors – a folktale of Ireland, Europe
[6] Hudden, Dudden and Donald – names of the three neighbors
[7] Translated for the word “Magpie” bird

उसने तुरन्त हाथ घुमा कर उसको पकड़ कर अपनी जेब में रख लिया।

बाजार में जा कर उसने अपने बैल की खाल बेची और फिर शराब पीने के लिये एक होटल में घुस गया।

जब वहॉ की मालकिन उसे अन्दर कमरे में ले जा रही थी तो उसने उस चिड़िया को ज़रा सा दबा दिया। दबाने से चिड़िया के मुँह से कुछ टूटे फूटे शब्द निकल पड़े।

होटल की मालकिन उन शब्दों को सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली — "अरे यह मैं क्या सुन रही हूँ? लगता है कि कोई बात कर रहा है पर फिर भी मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

डोनाल्ड बोला — "आप ठीक कह रही हैं। मेरे पास एक चिड़िया है जो मुझे सब कुछ बताती है। मैं इसे हमेशा अपने पास रखता हूँ। इस समय यह यह कह रही है कि आप जो मुझे शराब दे रही हैं आपके पास उससे भी अच्छी शराब है।"

मालकिन बोली — "अजीब बात है, यह तो बिल्कुल ठीक बोल रही है। क्या तुम मुझे यह चिड़िया बेचोगे?"

डोनाल्ड बोला — "हॉ मैं इसे बेच सकता हूँ अगर मुझे इसके अच्छे दाम मिल जायें तो।"

मालकिन बोली — "मैं तुम्हारा टोप चॉदी के सिक्कों से भर दूँगी।"

डोनाल्ड ने खुशी खुशी वह चिड़िया उस होटल की मालकिन को बेच दी और घर चला गया।

कुछ देर बाद ही वह हडिन और डडिन से मिला और उनसे बोला — "तुम लोग सोच रहे होगे कि शायद तुमने मेरे साथ बुरा किया है पर नहीं, तुमने तो यह सब मेरे अच्छे के लिये ही किया था। देखो न उस बैल की खाल से मुझे कितने सारे पैसे मिल गये।" कह कर उसने उनको अपना चॉदी के सिक्कों से भरा टोप दिखा दिया।

वह फिर बोला — "केवल एक खाल के इतने सारे पैसे तुम लोगों ने तो कभी देखे भी नहीं होंगे।"

उस रात हडिन और डडिन ने भी अपने अपने बैलों को मार डाला और अगले दिन उनकी खालें बेचने के लिये बाजार चल दिये। पर काफी भाव ताव करने के बाद भी उन लोगों को उन खालों का बहुत ही कम पैसा मिला।

आखिरकार उतने ही पैसे से सन्तुष्ट हो कर बड़े गुस्से में वे घर पहुॅचे। वे डोनाल्ड से इस बात का बदला लेना चाहते थे। डोनाल्ड को भी इस बात का पता था कि वे लोग जरूर ही कुछ न कुछ गड़बड़ घोटाला करेंगे।

यह भी हो सकता था कि वे उसका पैसा चुरा लें या फिर उसे सोते में मार दें। मारने के डर से उसने अपनी बूढ़ी मॉ को अपने बिस्तर में सुला दिया।

उसका ख्याल ठीक था। हडिन और डडिन उसका पैसा चुराने और उसको मारने के लिये उस रात उसके घर आये। उन्होंने यह सोचते हुए उसकी मॉ का गला घोट दिया कि वे डोनाल्ड को मार रहे थे। पर डोनाल्ड ने जब कुछ शोर मचाया तो वे उसका पैसा लिये बिना ही भाग गये।

अगले दिन डोनाल्ड अपनी मरी हुई मॉ को अपने कन्धे पर डाल कर शहर ले चला। रास्ते में एक कुॅए पर रुक कर उसने अपनी मॉ के शरीर को एक डंडे के सहारे इस तरह खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कुॅए पर पानी पीने के लिये खड़ी हो।

फिर वह पास के एक शराबखाने में घुस गया और वहॉ पास में खड़ी एक स्त्री से बोला — "क्या आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करेंगी? मेरी मॉ बाहर कुॅए के पास खड़ी है उसको अन्दर आने को कहियेगा।

वह थोड़ा कम सुनती हैं सो अगर वह एक बार में ठीक से न सुनें तो उन्हें थोड़ा हिला लीजियेगा और कहियेगा कि वह यहॉ आ जायें।"

वह स्त्री बाहर आयी और उसकी मॉ से कई बार अन्दर आने को कहा परन्तु उसको लगा कि उसकी बात का तो उसके ऊपर कोई असर ही नहीं पड़ रहा है तो उसने उसको थोड़ा सा हिलाया।

पर यह क्या? उसके छूते ही वह सिर के बल कुँए में गिर गयी और डूब गयी। वह स्त्री इस घटना से बहुत ही डर गयी। उसने तुरन्त ही जा कर डोनाल्ड को यह सब कुछ बताया।

डोनाल्ड सिर पर हाथ मार कर बोला — "अरे यह आपने क्या किया?"

और तुरन्त ही बाहर जा कर उसने कुँए से अपनी माँ का शरीर बाहर निकाला। वह उसकी मौत पर दुखी हो कर रोने लगा।

इस तरह डोनाल्ड तो केवल दुखी होने का बहाना कर रहा था पर उस स्त्री की हालत बहुत ही खराब थी। वह अपने आपको डोनाल्ड की माँ का हत्यारा समझ रही थी।

उस शहर के लोगों ने डोनाल्ड को इस दुर्घटना के बहुत सारे पैसे दिये और इस तरह डोनाल्ड पहले से भी कहीं ज़्यादा पैसे ले कर घर लौटा।

घर आ कर उसने पहले की तरह से हडिन और डडिन को अपने पैसों के बारे में बताया और बोला — "तुम लोग कल रात मुझे मारने के लिये आये थे न, पर यह मेरे लिये अच्छा हुआ कि वह सब मेरी माँ पर गुजरा। अब मुझे बारूद बनाने के लिये काफी पैसे मिल गये।"

उसी रात हडिन और डडिन दोनों ने अपनी माँ को मार दिया और अगली सुबह उनके मरे हुए शरीरों को अपने अपने कन्धों पर डाल कर शहर ले चले।

शहर पहुँच कर वे आवाज लगाने लगे — "इन औरतों को बारूद के बदले में कौन खरीदेगा?" सभी उनकी बात पर हँस पड़े और बच्चों ने उनको मार पीट कर भगा दिया।

अब उन्होंने फिर से डोनाल्ड से बदला लेने का फैसला किया।

वे जब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि डोनाल्ड नाश्ता कर रहा है। वे पीछे से आये, उन्होंने डोनाल्ड को एक थैले में डाला और नदी की तरफ ले चले।

रास्ते में उनको सामने ही एक खरगोश दिखायी पड़ गया। खरगोश देख कर उन्होंने थैला तो सड़क पर रख दिया और उस खरगोश को पकड़ने दौड़ पड़े।

उन्होंने सोचा कि खरगोश जल्दी ही पकड़ में आ जायेगा तो क्यों न उसको भी रास्ते में पकड़ लिया जाये परन्तु वह खरगोश तो भागता ही चला गया और उसके पीछे भागते भागते वे भी काफी दूर निकल गये।

इधर जब कुछ देर हो गयी तो डोनाल्ड ने थैले में बैठे बैठे गाना गाना शुरू कर दिया। एक आदमी सड़क पर से गुज़र रहा था कि उसने थैले में से गाने की आवाज सुनी तो वह रुक गया।

उसने पूछा — "यह क्या मामला है कि तुम थैले में बन्द हो और गाना गा रहे हो?"

डोनाल्ड बोला — "मैं स्वर्ग जा रहा हूँ और बहुत जल्दी ही मैं इन सब मुश्किलों से आजाद हो जाऊँगा।"

वह आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारी जगह इस थैले बन्द हो जाऊँ तो तुम मुझसे क्या लोगे?"

डोनाल्ड बोला — "कह नहीं सकता पर इसके लिये तुम्हें काफी पैसा देना पड़ेगा क्योंकि स्वर्ग जाना कोई आसान काम नहीं है।"

वह आदमी बोला — "मेरे पास ज़्यादा पैसे तो नहीं हैं पर मेरे पास बीस जानवर हैं जो मैं तुमको दे सकता हूँ। चलेगा?"

डोनाल्ड बोला — "ठीक है मैं बीस जानवरों से ही काम चला लूँगा।"

आदमी ने खुशी खुशी थैला खोल कर डोनाल्ड को बाहर निकाल दिया। बाद में डोनाल्ड ने उस आदमी को उस थैले मे बन्द कर दिया और उसके बीस बढ़िया जानवर ले कर घर आ गया।

कुछ देर बाद हडिन और डडिन खरगोश पकड़ कर लौटे और उस थैले को अपनी पीठ पर लाद कर चलने लगे। यह समझते हुए कि उस थैले में अभी भी डोनाल्ड बन्द है उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया। वह थैला तुरन्त ही पानी में डूब गया।

वे जल्दी जल्दी घर लौटने लगे ताकि डोनाल्ड की जायदाद पर जल्दी ही कब्जा कर सकें, पर यह क्या? घर आ कर तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उन्होंने देखा कि डोनाल्ड तो घर में है और उसके पास कई सारे अच्छे किस्म के जानवर भी हैं जो पहले उसके पास कभी नहीं थे।

उन्होंने आ कर डोनाल्ड से पूछा — "अरे डोनाल्ड, यह क्या? हम तो समझे कि तुम डूब गये हो परन्तु तुम तो यहाँ हमारे सामने खड़े हो।"

डोनाल्ड बोला — "ओह हाँ, वहाँ तो मैं डूब ही गया था पर मुझे वहाँ डुबो कर तुमने मेरी बड़ी सहायता की क्योंकि वहाँ मुझे ये जानवर और सोना मिल गया था पर मैं उनमें से केवल एक ही चीज़ ले सकता था सो मैं जानवर ले कर चला आया पर सोना अभी भी वहीं पड़ा हुआ है।"

यह सुन कर दोनों के मन में लालच आ गया। उन्होंने फिर से कसम खायी कि वे डोनाल्ड के दोस्त बने रहेंगे पर वह किसी तरह उनको वह सोना दिलवा दे।

डोनाल्ड इस बार उनको नदी में उस जगह पर ले गया जहाँ वह नदी सबसे ज़्यादा गहरी थी।

उसने एक पत्थर उठाया और उसको नदी में फेंकते हुए बोला — "देखो, यही वह जगह है जहाँ पर सोना है। अब तुम ऐसा करो कि तुममें से एक इस जगह पर कूद जाओ और अगर तुमको किसी सहायता की जरूरत हो तो दूसरे को पुकार लेना।"

यह सुन कर हडिन तुरन्त ही उस जगह पर कूद गया। कुछ ही पल बाद वह ऊपर आ गया और ऐसी आवाज में कुछ बोला जैसे कोई डूबता आदमी बोलता है।

डडिन ने डोनाल्ड से पूछा — "यह क्या कह रहा है?"

डोनाल्ड बोला — "अरे, कह क्या रहा है सोना निकालने में तुम से सहायता माँग रहा है, और क्या कह रहा है।

यह सुन कर डडिन भी हडिन के साथ ही नदी में कूद गया और दोनों नदी में डूब कर मर गये। डोनाल्ड दोनों की बेवकूफी पर हँसता हुआ घर वापस आ गया।

5 बिल्लियों की कहानी[8]

एक स्त्री के दो बेटियॉ थीं – एक तो उसकी अपनी बेटी थी और दूसरी उसकी सौतेली बेटी थी। वह अपनी बेटी को तो बहुत प्यार करती थी पर अपनी सौतेली बेटी को नौकर की तरह से रखती थी।

एक दिन उसने अपनी सौतेली बेटी को चिकोरी[9] इकट्ठी करने के लिये जंगल भेजा पर काफी ढूँढने के बाद भी उसको चिकोरी तो मिली नहीं उसको एक बहुत बड़ा गोभी का फूल दिखायी दे गया। उसने उस गोभी के फूल को उखाड़ने की कोशिश की पर वह उसको काफी कोशिशों के बाद ही उखाड़ पायी।

उस फूल को उखाड़ने से वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया – एक कुँए जितना बड़ा। उस कुँए में नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी बनी हुई थी। वह लड़की यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कुँए में क्या था सो वह उस सीढ़ी के सहारे सहारे उस कुँए में नीचे उतर गयी।

नीचे जा कर उसको एक घर मिला जो बिल्लियों से भरा हुआ था। सारी बिल्लियॉ अपने अपने कामों में लगी हुई थीं। कोई घर

---

h[8] The Tale of the Cats – a folktale from Italy from its Terra d'Otranto.
Translated from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book is available at hindifolktales@gmail.com .

[9] Chicory is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. It looks like large thick radish. See its picture above.

की सफाई कर रही थी, तो कोई कुँए से पानी खींच रही थी, तो कोई सिलाई कर रही थी। कोई कपड़े धो रही थी तो कोई डबल रोटी बना रही थी।

लड़की ने एक बिल्ली के हाथ से झाड़ू ले ली और उसकी घर की सफाई में मदद करने लगी। फिर एक दूसरी बिल्ली से उसने मैली चादरें ले लीं और उसकी उनको धोने में मदद करने लगी। फिर उसने उनकी पानी खींचने में मदद की और एक बिल्ली को डबल रोटी ओवन में रखने में मदद की।

दोपहर को एक बड़ी बिल्ली आयी जो उन सब बिल्लियों की माँ थी। आ कर उसने घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग" और बोली — "जिस जिसने काम किया है वह यहाँ आ कर खाना खा ले। और जिसने भी काम नहीं किया है वह आये और हमको खाना खाते देखे।"

बिल्लियाँ बोलीं — "माँ, हममें से हर एक ने काम किया है पर इस लड़की ने हम सबसे ज़्यादा काम किया है।"

बड़ी बिल्ली बोली — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो। आओ और हमारे साथ आ कर खाना खाओ।" सो वे दोनों एक मेज पर बैठ गयीं।

मॉ बिल्ली ने उसको थोड़ा सा मॉस दिया, मैकेरोनी[10] दी और भुना हुआ मुर्गा दिया पर उसने अपने बच्चों को केवल बीन्स ही दीं।

इससे वह लड़की कुछ नाखुश हो गयी क्योंकि यह अच्छा खाना केवल वही अकेले खा रही थी और बाकी सब बिल्लियॉ तो केवल बीन्स ही खा रही थीं। उसको वे भूखी भी लगीं सो उसने अपने खाने में से हर चीज़ उनको दी।

जब वे सब खाना खा कर उठे तो लड़की ने मेज साफ की, बिल्लियों की भी प्लेटें साफ कीं, कमरा बुहारा और सारा सामान जहॉ रखा जाना चाहिये था वहीं रख दिया।

फिर उसने मॉ बिल्ली से कहा — "मॉ बिल्ली, अब मुझे अपने घर जाना चाहिये नहीं तो मेरी मॉ मुझे डॉटेगी।"

मॉ बिल्ली बोली — "बेटी एक मिनट। ज़रा रुको। मैं तुमको कुछ देना चाहती हूँ।"

उनके घर के नीचे की तरफ एक बहुत बड़ा भंडारघर था जिसमें बहुत सारी चीज़ें रखी थीं – सिल्क का सामान, पोशाकें, स्कर्ट, ब्लाउज़, ऐप्रन, सूती रूमाल, गाय की खाल के जूते आदि आदि।

मॉ बिल्ली उस लड़की को नीचे ले गयी और बोली — "तुमको इसमें से जो चाहिये वह ले लो।"

[10] A kind of Italian food preparation. See its picture above.

उस गरीब लड़की ने जो नंगे पैर थी और फटे कपड़ों में थी बोली — "बस मुझे एक ड्रैस दे दो, एक गाय की खाल का जूता दे दो और एक स्कार्फ। बस केवल इतना ही।"

मॉ बिल्ली बोली — "नहीं केवल इतना ही नहीं तुमने मेरी बच्चियों की बहुत सहायता की है इसलिये मैं तुमको एक बहुत ही अच्छी भेंट दूँगी।"

कह कर उसने वहॉ से सबसे अच्छा सिल्क का एक गाउन उठाया, एक बड़ा और बहुत सुन्दर रूमाल और एक जोड़ी स्लिपर उठाये और उन सबको उस लड़की को पहना कर बोली — "अब जब तुम बाहर जाओगी तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उँगली डालना और उसके बाद ऊपर देखना और फिर देखना कि क्या होता है।" और उसको विदा किया।

जब वह लड़की बाहर गयी तो उसको दीवार में छेद दिखायी दिये। मॉ बिल्ली के कहे अनुसार उसने उनमें अपनी उँगलियॉ डालीं तो उसकी उँगलियों में बहुत सुन्दर सुन्दर अँगूठियॉ आ गयीं।

फिर उसने ऊपर देखा तो एक तारा उसकी भौंह पर आ गिरा। इस तरह वह एक दुलहिन की तरह सजी धजी घर पहुँची।

उसकी सौतेली मॉ ने पूछा — "तुझको ये इतनी अच्छी अच्छी चीज़ें कहॉ से मिलीं?"

वह लड़की सीधे स्वभाव बोली — "मॉ मुझको कुछ छोटी छोटी बिल्लियॉ मिल गयी थीं। मैंने उनका काम करने में थोड़ी सी मदद

कर दी तो उन्होंने मुझे ये थोड़ी सी भेंटें दे दीं।" और उसने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी।

यह सुन कर उसकी सौतेली मॉ तो बस उस जगह अपनी आलसी बेटी को भेजने का इन्तजार करने लगी। अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी जा तू भी जा ताकि तू भी अपनी बहिन की तरह से अमीर हो कर आ सके।"

वह बोली — "मुझे नहीं चाहिये यह सब। मैं कहीं नहीं जाती।" क्योंकि उसको तो बड़े आदमियों से बात करने की भी तमीज नहीं थी।

वह फिर बोली — "और हॉ मुझे तो अभी कहीं जाना भी नहीं है। बाहर बहुत ठंडा है। मैं तो यहीं आग के पास बैठती हूॅ।"

पर उसकी मॉ ने एक डंडी उठायी और उससे उसको हड़काते हुए घर के बाहर निकाल दिया। सो अब तो उस बेचारी को वहॉ से उन बिल्लियों के घर जाना ही पड़ा। बड़ी मुश्किल से तो उसको वह बड़ा गोभी का फूल मिला और फिर बड़ी मुश्किल से उससे वह उखड़ा।

फूल उखाड़ कर वह भी उस कुॅए में बनी सीढ़ियों से उतर कर नीचे बिल्लियों के घर में पहुॅची।

जब उसने पहली बिल्ली को देखा तो हॅसी हॅसी में उसने उसकी पूॅछ अपनी टॉगों के बीच में दबा ली। फिर दूसरी को देखा तो उसके कान खींच लिये और तीसरी की मूॅछें खींच लीं।

जो बिल्ली सिलाई कर रही थी उसने उसकी सुई में से धागा निकाल दिया। जो बिल्ली पानी खींच रही थी उसकी उसने बालटी का पानी पलट दिया।

इस तरह उसने उन सब बिल्लियों के सारे काम रोक दिये जो वे उस समय कर रही थीं। वे बेचारी कुछ भी नहीं कर सकीं।

दोपहर को जब मॉ बिल्ली आयी तो उसने रोज की तरह घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग।" और आ कर रोज की तरह से बोली "जिस किसी ने भी काम किया है वह यहॉ आये और खाना खा ले और जिसने भी काम नहीं किया है वह हमको केवल खाना खाते देखता रहे।"

बिल्लियॉ बोलीं — "मॉ, हम लोग तो काम करना चाहते थे पर इस लड़की ने हमको हमारी पूँछ पकड़ कर खींच लिया, हमारे सारे काम रोक दिये और हमारी ज़िन्दगी दूभर कर दी इसलिये हम कुछ भी नहीं कर सके।"

मॉ बिल्ली बोली — "ठीक है, आओ मेज पर बैठो और खाना खाओ।"

मॉ बिल्ली ने उस लड़की को सिरके में डूबी हुई जौ की केक खाने के लिये दी और अपनी बच्चियों को मैकेरोनी और मॉस खाने के लिये दिया। जितनी देर तक वे सब खाना खाते रहे वह लड़की बिल्लियों का ही खाना खाती रही।

जब उनका खाना खत्म हो गया तो उस लड़की ने कुछ नहीं किया – न तो उसने मेज साफ की, न ही उसने प्लेटें साफ कीं और न ही उसने वहॉ का सब सामान वहॉ से उठा कर उनकी जगह रखा।

वह बोली — "मॉ बिल्ली, मुझे वह सब सामान दो जो तुमने मेरी बहिन को दिया था।"

मॉ बिल्ली उसको नीचे बने अपने भंडारघर में ले गयी और उससे वहॉ रखे सामान को दिखा कर पूछा कि उसमें से उसको क्या चाहिये।

उस सब सामान को देख कर तो उस लड़की की आखें चकाचौंध गयीं। वह लड़की बोली — "वह वाली पोशाक जो सबसे अच्छी है और वह वाले जूते जिनकी एड़ी सबसे ऊॅची है। वह मुझे दे दो।"

मॉ बिल्ली बोली — "ठीक है। तुम अपने कपड़े उतारो और यह तेल लगी ऊनी पोशाक पहन लो और ये जूते जिनकी एड़ी सारी खत्म हो चुकी है इनको पहन लो।"

उसको ये कपड़े पहना कर और उसके बालों में एक फटा स्कार्फ बॉध कर उस मॉ बिल्ली ने उसको वहॉ से भेज दिया और बोली — "अब तुम जाओ और जब तुम बाहर जाओ तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उॅगलियॉ डालना और फिर ऊपर देखना और फिर देखना कि क्या होता है।"

यह सब पहन कर वह लड़की वहॉ से चली गयी। बाहर जा कर उसने दीवार में कुछ छेद देखे तो उनमें अपनी उॅगलियॉ डाल दीं। उसकी उॅगलियों में बहुत सारे कीड़े लिपट गये। उसने अपनी उॅगलियों को उन छेदों में से जितना खींचने की कोशिश की उतनी ही वे उसमें जकड़ी रह गयीं।

फिर उसने ऊपर देखा तो एक खून से भरा सौसेज उसके मुॅह पर गिर पड़ा और वहॉ से वह नीचे गिरा भी नहीं इसलिये उसे उसको बराबर खाते रहना पड़ा।

जब वह इस पोशाक में घर पहुॅची तो वह एक चुड़ैल से भी बुरी शक्ल में थी। उसकी मॉ तो उसको इस शक्ल में देख कर इतना गुस्सा और परेशान हुई कि वह तो वहीं की वहीं मर गयी। और वह लड़की भी वह खून भरा सौसेज खा कर कुछ दिनों बाद ही मर गयी।

इस तरह दूसरों से अच्छे व्यवहार और बुरे व्यवहार का नतीजा ऐसा ही होता है।

6 तेरह डाकू[11]

एक बार की बात है कि इटली के किसी शहर में दो भाई रहते थे – एक अमीर चमार था और दूसरा गरीब किसान।

एक बार वह किसान अपने खेत से वापस लौट रहा था कि उसने तेरह आदमी एक ओक के पेड़ को नीचे देखे। हर एक के पास बहुत ही भयानक चाकू थे जो किसी को भी डराने के लिये काफी थे।

वे चाकू देख कर किसान ने सोचा कि लगता है ये तो डाकू हैं तो वह वहीं छिप गया। वह डर गया था कि वे डाकू कहीं उसे मार न दें।

उसने देखा कि वे सब उस ओक के पेड़ के पास गये। फिर उसने उनके सरदार को कहते सुना "खुल जा ओक"। सुन कर उस ओक के पेड़ ने एक जॅभाई ली और वहॉ एक दरवाजा खुल गया। एक एक कर के सारे डाकू उस दरवाजे के अन्दर चले गये।

वह किसान अपनी छिपने की जगह से सब देखता रहा। कुछ देर बाद वे डाकू एक एक कर के वहॉ से निकल आये। उनका सरदार सबसे बाद में बाहर आया।

---

[11] The Thirteen Bandits – a folktale from Italy. Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book and more stories like this story in the book "Stories Like Ali Baba and Forty Thieves" are available at hindifolktales@gmail.com .

उसने कहा "बन्द हो जा ओक" और ओक के पेड़ में जो दरवाजा खुला था बन्द हो गया। और वे डाकू वहॉ से चले गये।

जब वे डाकू चले गये तो किसान ने खुद उस दरवाजे के अन्दर जाने का फैसला किया। वह पेड़ तक गया और बोला "खुल जा ओक" तो उस पेड़ ने पहले की तरह से जॅभाई ली और फिर वहॉ एक दरवाजा खुल गया और वह उसके अन्दर चला गया।

अन्दर जा कर उसको सीढ़ियॉ दिखायी दीं तो वह उन सीढ़ियों से नीचे चला गया। नीचे उतरने पर वह एक गुफा में पहुॅच गया। वहॉ जा कर तो उसने जो कुछ देखा उससे तो उसका मुॅह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

वहॉ खजाने के तेरह ढेर लगे पड़े थे और वे सभी नीचे फर्श से ऊपर छत तक जा रहे थे। वहॉ कई ढेर सोने के थे, कई ढेर हीरों के थे और कई ढेर नैपोलियन्स[12] के थे। किसान तो बहुत देर तक उनको घूरता ही रह गया। उसको तो वह सब देखने में ही बहुत अच्छा लग रहा था।

जब वह उनको अच्छी तरह देख चुका तो सबसे पहले उसने उनसे अपनी पोशाक की जेबें भरनी शुरू कीं। फिर उसने अपनी पैन्ट की जेबें भरीं। उसके बाद उसने अपनी पैन्ट ऊपर तक खींच

[12] A former gold coin of France equal to 20 Francs and bearing a portrait of Napoleon I or Napoleon III.

ली और उससे बनी खाली जगह में सोने के टुकड़े भर लिये और नाचता हुआ घर चला गया।

वह जब इस हालत में घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा — "अरे यह क्या हुआ है तुमको?"

यह सुन कर उसने अपनी सारी जेबें खाली कर दीं और उसने उसको डाकू और उनकी गुफा के बारे में सब कुछ बता दिया।

उसने सोचा कि वहाँ से लाया पैसा वह उस बोतल से गिन लेगा जिससे शराब नापी जाती है। पर उस समय उसके पास ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिससे वह उस पैसे को नाप सकता सो उसने अपनी पत्नी को अपने भाई के घर भेजा कि वह वहाँ से उस पैसे को नापने के लिये कोई चीज़ ले आये।

चमार भाई को मालूम था कि उसका भाई तो बहुत ही गरीब था तो यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे भाई के पास ऐसा क्या आ गया जिसको वह नापना चाहता है और उसने नापने वाला मँगवाया है तो क्यों।

क्योंकि उसके घर में तो कुछ ऐसा तो था ही नहीं जिसको वह नाप सके। मैं देखता हूँ। सो उसने क्या किया कि एक बोतल की तली में एक मछली की हड्डी चिपका दी।

किसान भाई ने अपना पैसा नापा और वह बोतल अपने चमार भाई को वापस भिजवा दी। किसान भाई ने देखा ही नहीं कि बोतल की तली में उसके भाई ने कुछ चिपकने वाला लगा दिया था जिसमें

उसका एक नैपोलियन का सिक्का चिपक गया था। उसने सीधे स्वभाव अपना सामान तौल कर बोतल अपने भाई को वापस करवा दी थी।

जैसे ही किसान भाई ने चमार भाई को उसकी बोतल वापस की उसके चमार भाई ने तुरन्त ही उस बोतल की तली को देखा कि उसके भाई ने क्या नापा था और उसकी बोतल की तली की मछली की हड्डी में कुछ चिपका था या नहीं।

उसने देखा कि वहॉ तो एक नैपोलियन सिक्का चिपका हुआ था। वह देख कर तो उसका चेहरा चमक उठा।

वह उसी समय अपने भाई के पास भागा गया और उससे कहा — "मुझे बताओ यह पैसा तुम्हें किसने दिया?"

किसान भाई सीधा था उसने उसे सब कुछ बता दिया।

चमार भाई बोला — "भाई तुम मुझे भी उस जगह ले चलो न। मेरे बच्चे हैं पालने पोसने के लिये इसलिये मुझे पैसे की तुमसे कहीं ज़्यादा जरूरत है।"

किसान भाई राजी हो गया और अपने चमार भाई को दो गधे और चार थैलों के साथ ले कर उसी ओक के पेड़ के पास चला। वहॉ जा कर वह बोला "खुल जा ओक" और ओक के पेड़ में एक दरवाजा खुल गया।

दोनों भाई नीचे उतरे दोनों ने अपने अपने थैले भरे और घर वापस आ गये। घर आ कर उन दोनों ने वह सामान बॉट लिया –

सोना, हीरे, नैपोलियन्स, सभी कुछ। अब उनके पास बहुत पैसा था सो वे दोनों आराम से रहने लगे।

एक दिन उन्होंने आपस में बात की तो किसान भाई बोला — "अब तो हम लोग आराम से रह रहे हैं और अगर हमें मरना नहीं है तो हमको अब वहाँ जाने की कोई जरूरत भी नहीं है।"

हालाँकि उस समय चमार भाई इस बात पर राजी हो गया था फिर भी वह अपने आपको दोबारा वहाँ जाने से रोक नहीं सका। एक दिन वह अपने भाई को बिना बताये अकेला ही वहाँ चला गया।

असल में वह इस किस्म का आदमी था कि उसके लिये कभी कोई चीज़ काफी नहीं थी।

इत्तफाक से जब वह वहाँ पहुँचा तो वे डाकू उस पेड़ के अन्दर ही थे। वह उनके वहाँ से निकलने का इन्तजार करता रहा। आखिर वे बाहर निकले। उसने उनको गिना तो सही मगर वह उनको गिनते गिनते उनकी गिनती भूल गया।

जब वे सब वहाँ से बाहर निकल गये तो वह उस ओक के पेड़ के अन्दर गया। अब उसको अपनी गिनती भूलने की गलती का नतीजा भुगतना पड़ा। उस पेड़ में से तेरह की बजाय केवल बारह डाकू ही बाहर निकले थे। इसका मतलब था कि एक डाकू अभी भी अन्दर था।

असल में हुआ क्या था कि जब वे डाकू वहॉ आये तो उन्होंने देखा कि उनका कुछ सामान वहॉ से गायब है। उनको कुछ शक हुआ कि लगता है कि किसी को उनके खजाने का पता मालूम हो गया है सो वे रोज एक डाकू को वहॉ छोड़ दिया करते थे ताकि वह उस गुफा की रखवाली करता रहे और अगर कोई वहॉ आये तो उसको पकड़ भी ले।

सो जैसे ही यह चमार भाई गुफा में घुसा वह एक डाकू उसके ऊपर कूद पड़ा और उसने उसको काट कर उसके टुकड़े टुकडे कर दिये। फिर उसने उनको बाहर ले जा कर पेड़ की दो शाखाओं पर टॉग दिया।

जब वह चमार भाई बहुत देर तक घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी किसान भाई के पास गयी और बोली — "भैया, मुझे ऐसा लगता है कि उनके साथ कुछ बुरा हो गया है। आपके भाई उस ओक के पेड़ पर गये थे और अभी तक वापस नहीं लौटे हैं।"

किसान भाई बोला — "भाभी, आप चिन्ता न करें मैं अभी जा कर देखता हूॅ।" उसने रात होने का इन्तजार किया और रात होने पर ओक के पेड़ की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि ओक के पेड़ की शाखाओं से उसके भाई के शरीर के चार टुकड़े लटक रहे हैं। वह समझ गया कि उसके भाई के साथ क्या हुआ था।

उसने उन चारों टुकड़ों को खोला, अपने गधे पर लादा और उनको घर ले आया। चमार की पत्नी और बच्चे तो उसको इस हालत में देख कर रोने चीखने लगे।

किसान अपने भाई की लाश को चार हिस्सों में दफनाना नहीं चाहता था सो उसने अपने जानने वाले एक और चमार को बुलवाया और उसकी लाश को उससे सिलवा कर दफना दिया।

अब उस चमार की पत्नी के पास जो कुछ भी बचा था उस पैसे से उसने एक सराय खरीद ली और उसको चलाने लगी।

उधर डाकुओं ने देखा कि वह लाश जो उन्होंने ओक के पेड़ की शाखाओं से टॉगी थी वह गायब हो गयी है तो उन्हें कुछ शक हुआ। उनको लगा कि अभी कोई और भी था जो उनकी गुफा का पता जानता था। सो अबकी बार वे उस दूसरे आदमी को ढूँढने निकले।

उन तेरह डाकुओं में से एक डाकू शहर में गया और पता किया कि उस शहर में कहीं चार हिस्से की हुई कोई लाश दफनायी गयी थी या नहीं।

सबके मना करने पर कि वहॉ ऐसी कोई लाश नहीं दफनायी गयी उन्होंने सोचा कि फिर जरूर ही किसी ने उसको सिल कर दफनाया होगा। सो वह आदमी फिर सारे चमारों के पास गया और उनको एक फटा जूता दिखा कर उनसे पूछा — "क्या तुम यह जूता सिल दोगे?"

उनमें से एक चमार बोला — "क्या तुम मजाक कर रहे हो? मैंने तो एक चमार के पूरे शरीर को सिला है तो यह जूता मेरे लिये क्या चीज़ है।"

डाकू ने पूछा — "वह चमार कौन था?"

वह चमार बोला — "वह हमारा एक साथी चमार था। उसके शरीर के किसी ने चार हिस्से कर दिये थे मैंने उसी को सिला था। उसकी पत्नी अब एक सराय चलाती है।"

इस तरह से डाकुओं को पता चल गया कि वह सराय चलाने वाली ही उनके खजाने की मालकिन थी।

डाकुओं ने एक बहुत बड़ा बर्तन लिया और ग्यारह डाकू उस बर्तन के अन्दर छिप गये। वह बर्तन उन्होंने एक गाड़ी पर लादा और बाकी दो डाकू उस गाड़ी को खींच कर ले गये। वे उसी सराय में पहुँचे जिसकी मालकिन उस चमार भाई की पत्नी थी।

वहाँ जा कर उन्होंने उस सराय की मालकिन से पूछा — "क्या तुम हमारा यह बर्तन कुछ देर के लिये रख लोगी और हमको खाना भी खिला दोगी?"

सराय की मालकिन बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप आराम से बैठें।"

कह कर उसने दोनों गाड़ी खींचने वालों के सामने मैकेरोनी[13] दो प्लेटें रख दीं।

उस चमार की बेटी वहीं पास में खेल रही थी। उसने खेलते खेलते उस बर्तन में से कुछ आवाज सुनी। सो वह उसके और पास पहुँच गयी और ध्यान दे कर सुनने लगी। उसने सुना एक आदमी कह रहा था "अब हम इस स्त्री को देख लेंगे।"

वह लड़की भाग कर अपनी माँ के पास गयी और उसको जा कर बताया कि उस बक्से में कुछ आदमी हैं जो इस तरह की बात कर रहे हैं।

उस स्त्री ने तुरन्त ही चूल्हे पर से उबलते पानी की केटली उतारी और उसके पानी को उस बर्तन में पलट दिया। इतने गर्म पानी के पड़ने से वे सब डाकू जल कर मर गये।

फिर वह बाहर गयी और उन दोनों को और मैकेरोनी दी। फिर उसने शराब में दवा मिलायी जिसको पी कर वे दोनों सो गये। जब वे सो गये तो उसने उन दोनों के सिर काट लिये।

फिर वह अपनी बेटी से बोली — "जाओ, अब तुम जज के पास जाओ और उसको यहाँ ले आओ।" यह सुन कर वह लड़की जज के पास गयी और जज को बुला लायी।

---

[13] Macaroni is very popular and main Italian food. It comes in several shapes. Here it is shown in elbow shape. See its picture above.

जज वहाँ आया तो उसने उन डाकुओं को पहचान लिया और उस स्त्री को उन डाकुओं को मारने के लिये बहुत बड़ा इनाम दिया।

7 दो बहिनें[14]

एक बार की बात है कि दो बहिनें थीं – एक बहिन मारकीज़[15] थी और दूसरी बहिन बहुत गरीब हालत में थी।

मारकीज़ के एक बदसूरत सी बेटी थी और उस गरीब बहिन के तीन बेटियॉ थीं। वे तीनों अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये सूत कातने का काम करती थीं।

एक दिन उनके पास मकान का किराया देने के लिये पैसे नहीं थे तो उनके मकान मालिक ने उनको घर से बाहर निकाल दिया और वे सड़क पर आ गयीं।

मारकीज़ का नौकर उधर से गुजर रहा था तो उसने मारकीज़ की बहिन और उसकी बेटियों को सड़क पर खड़ा देखा तो मारकीज़ को जा कर उनके बारे में बताया।

उसने मारकीज़ से उनको शरण देने की प्रार्थना की और वह तब तक उससे प्रार्थना करता रहा जब तक वह उनको अपने सामने वाले दरवाजे के ऊपर वाले कमरे में रखने के लिये तैयार नहीं हो गयी।

शाम को लड़कियॉ बैठीं और वे लालटेन की रोशनी में काम करने लगीं ताकि वे अपने लैम्प का तेल बचा सकें। पर यह

---

[14] The Two Cousins – a folktale from Italy. Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book is available at hindifolktales@gmail.com .

[15] Marquise – the wife of a Marquis (Noble Man)

मारकीज़ को अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि वे चीज़ें बर्बाद कर रही हैं इसलिये उसने लालटेन बुझा दी। वे लड़कियॉ फिर चॉदनी में अपना सूत कातने लगीं।

एक शाम सबसे छोटी लड़की ने निश्चय किया कि वह तब तक जाग कर काम करेगी जब तक चॉद छिपेगा। सो जब चॉद उतरने लगा तो वह उसके पीछे पीछे चल दी।

इस तरह वह जब वह उसके साथ चलते और सूत कातते हुए उसके पीछे पीछे चली जा रही थी तो एक तूफान में फॅस गयी। वहीं पास में उसको एक मौनेस्टरी[16] दिखायी दी तो उस मौनेस्टरी में जा कर उसने शरण ली।

मौनेस्टरी मे उसको बारह साधु[17] मिले। उन्होंने उस लड़की से पूछा — "बेटी तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

वह बोली — "बाहर तूफान आया हुआ है सो मैं उस तूफान से बचने के लिये यहॉ आ गयी।"

उनमें से जो सबसे बड़ा साधु था वह बोला — "भगवान करे तुम और भी ज़्यादा प्यारी होती जाओ।"

दूसरा साधु बोला — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों में से हीरे और मोती झड़ें।"

---

[16] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

[17] Translated for the word "Monk"

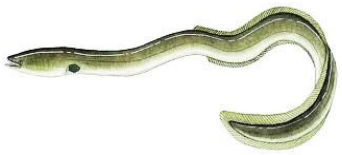

तीसरा साधु बोला — "जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से कई प्रकार की मछलियॉ और ईल मछली[18] गिरें।

चौथा साधु बोला — "जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुॅह से गुलाब और चमेली के फूलों की बारिश हो।"

पॉचवे साधु ने कहा — "तुम्हारे गाल दो सेबों की तरह से हो जायें।"

छठे साधु ने कहा — "जब तुम काम करो तो जैसे ही तुम उसे शुरू करो तो वह उसी समय खत्म हो जाये।"

तब तक तूफान थम चुका था सो उन्होंने उसको जाने का रास्ता दिखाया और कहा कि जब वह आधे रास्ते पहुॅच जाये तो पीछे मुड़ कर देखे।

इसके बाद वह लड़की वहॉ से चली गयी। उसने उन साधुओं के कहे अनुसार आधे रास्ते जा कर पीछे मुड़ कर देखा तो वह तो इतनी चमकीली हो गयी जैसे कि तारा।

जब वह घर पहुॅची तो उसने पहला काम तो यह किया कि उसने एक बर्तन में पानी भरा और उसमें अपने हाथ डुबो दिये। तुरन्त ही उस बर्तन में दो ताजा ईल मछली आ गयीं जैसे उनको अभी अभी पकड़ कर लाया गया हो। उसकी मॉ और बहिनों को

[18] Eel fish – see its picture above

यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उन्होंने उससे कहा कि वह उनको सब बात बताये।

फिर उन्होंने उसके बालों में कंघी की तो उनमें से बहुत सारे हीरे और मोती निकल पड़े। उसकी मॉ और बहिनों ने उन सबको इकट्ठा कर लिया और वे उनको अपनी मारकीज़ मौसी के पास ले गयीं।

मारकीज़ ने तुरन्त ही उनसे उसका सारा हाल पूछा और अपनी बेटी को वहॉ भेजने का निश्चय किया क्योंकि उसकी लड़की को तो सुन्दरता की बहुत ज़्यादा जरूरत थी।

उसने अपनी बेटी को छज्जे पर खड़े हो कर पूरी शाम इन्तजार करने के लिये कहा। और जब चॉद ढलने लगा तो उसने उसको भी सूत कातते हुए चॉद के पीछे पीछे भेजा।

उसको भी वह मौनेस्टरी मिल गयी और वहॉ वे बारह साधु मिल गये। उन साधुओं ने उस लड़की को तुरन्त पहचान लिया कि वह मारकीज़ की बेटी थी।

वहॉ बैठे सबसे बड़े साधु ने कहा — "भगवान करे तुम और ज़्यादा बदसूरत हो जाओ।"

दूसरे साधु ने कहा — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों से बहुत सारे सॉप निकलें।"

तीसरा साधु बोला — "जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से बहुत सारे हरे गिरगिट निकलें।"

चौथा साधु बोला — "जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकले।"

इसके बाद उन्होंने उसको वहाँ से भेज दिया। मारकीज़ तो अपनी बेटी के वापस आने का बहुत बेचैनी से इन्तजार कर रही थी पर जब उसकी बेटी घर वापस लौटी तो उसने देखा कि वह तो पहले से भी ज़्यादा बदसूरत हो गयी थी। यह देख कर उसकी माँ को तो इतना धक्का लगा कि वह तो बस मरते मरते ही बची।

उसने उससे पूछा कि उसके साथ क्या हुआ था तो जैसे ही उसने बोलने के लिये मुँह खोला तो उसके मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकलते देख कर तो वह बेहोश ही हो गयी।

इस बीच वह सुन्दर लड़की एक बार दरवाजे के पास बैठी थी कि एक राजा उधर से गुजरा। राजा ने उसको देखा तो उसको उस लड़की से प्रेम हो गया। उसने शादी के लिये उसका हाथ माँगा तो उसकी मारकीज़ मौसी ने हाँ कर दी।

वह लड़की अपनी मारकीज़ मौसी के साथ जो उसकी सबसे ज़्यादा करीब की रिश्तेदार थी उस राजा के साथ उसके देश चली गयी।

थोड़ी दूर जाने के बाद राजा आगे आगे चला गया ताकि वह अपने महल में अपनी पत्नी का ठीक से स्वागत कर सके। जैसे ही राजा आँखों से ओझल हुआ तो मारकीज़ ने दुलहिन को पकड़ कर

उसकी ऑखें निकाल लीं। उसको उसने एक गुफा में फेंक दिया और अपनी बेटी को राजा की गाड़ी में बैठा दिया।

जब राजा ने अपनी रानी की बदसूरत बहिन को गाड़ी से उतरते देखा तो वह डर गया। उसने धीरे से पूछा — "इसका क्या मतलब है?" लड़की ने इसका जवाब देने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि उसकी सॉस की बू से राजा वहीं बेहोश सा गिर पड़ा।

तब मारकीज़ ने राजा को एक कहानी बना कर सुनायी कि उस लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है। पर राजा को इस कहानी पर विश्वास नहीं हुआ और उसने उन दोनों मॉ बेटी को जेल में डलवा दिया।

उधर वह अन्धी लड़की उस गुफा में पड़ी पड़ी रोती रही और सहायता के लिये पुकारती रही। तभी वहॉ से एक बूढ़ा गुजर रहा था। उसने उसका रोना और चिल्लाना सुना तो उसके पास आया। उसको उस बुरी दशा में देख कर वह उसको उठा कर अपने घर ले गया।

अब उसका घर तो हीरे और मोतियों से, गुलाब और चमेली के फूलों से और ईल और मछलियों से भर गया। उसने उन सबसे दो टोकरियॉ भर लीं और उनको ले कर राजा की खिड़की के नीचे उनको बेचने के लिये खड़ा हो गया।

लड़की ने उससे कहा कि वह राजा को वे हीरे जवाहरात ऑखों के बदले में बेचे।

मारकीज़ ने उस बूढ़े को तुरन्त बुलाया और अपनी बहिन की लड़की की एक ऑख दे कर उन सब सुन्दर चीज़ों को खरीद लिया। उसने सोचा कि वह राजा से यह कहेगी कि यह सब उसकी बेटी ने पैदा किया है।

बूढ़ा वह एक ऑख ले कर वहॉ से चल दिया और वह एक ऑख ला कर उस लड़की को दे दी। उस लड़की ने अपनी वह ऑख अपनी ऑख की जगह लगा ली। अगले दिन वह फिर वैसी ही टोकरियॉ ले कर महल गया और उनको भी एक ऑख के बदले में बेचने के लिये कहा।

मारकीज़ जो राजा को इस बात का विश्वास दिलाने के लिये बहुत उत्सुक थी कि वह हीरे मोती फूल मछलियॉ आदि सब उसकी बेटी ने पैदा किये थे सो उसने उस बूढ़े से वे दोनों टोकरियॉ भी अपनी बहिन की बेटी की दूसरी ऑख दे कर खरीद लीं।

पर राजा को इस बात का विश्वास नहीं दिलाया जा सका कि वह सब उस लड़की ने ही पैदा किया है क्योंकि वह जब भी उस लड़की के पास जाता तो उसकी सॉसों से अभी भी वैसी ही बू आती जैसी कि पहली बार आयी थी।

अब उस गरीब बहिन की लड़की को तो अपनी ऑखें मिल गयीं थीं सो एक दिन उसने एक कपड़े पर कढ़ाई कर के अपनी तस्वीर बनायी और उस तस्वीर को बूढ़े को दे कर बेचने के लिये उसी सड़क पर रखवा दिया जिस पर राजा का महल था।

राजा उधर से निकला तो उसने वह तस्वीर देखी तो उसने बूढ़े से पूछा — "यह तस्वीर किसने बनायी है?"

बूढ़े ने उसको सारी कहानी सुना दी। तो राजा बोला कि वह उस लड़की से मिलना चाहता है। बूढ़ा राजा को अपने घर ले गया। राजा ने उस लड़की को पहचान लिया और वह उसको अपने महल ले आया।

मारकीज़ को उसने गरम तेल में डाल कर उबाल कर मार दिया और अपनी रानी के साथ खुशी से रहने लगा। बाद में उसने अपनी रानी के परिवार को भी अपने महल में बुलवा लिया।

8 दो खच्चर हॉकने वाले[19]

एक बार दो खच्चर[20] हॉकने वाले थे जो आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। उनमें से एक का भगवान में पूरा विश्वास था जबकि दूसरा शैतान[21] में विश्वास करता था।

एक दिन वे दोनों यात्रा कर रहे थे तो एक ने दूसरे से कहा — "वह शैतान ही है जो हमको सहायता करता है।"

दूसरा बोला — "नहीं जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसी की सहायता करता है।"

वे दोनों इस बात पर आपस में काफी देर तक बहस करते रहे पर अन्त में शैतान में विश्वास रखने वाले ने कहा — "चलो, अच्छा एक एक खच्चर की शर्त लगाते हैं।"

उसी समय काले कपड़े पहने एक नाइट[22] वहॉ से गुजरा। वह इन कपड़ों में शैतान था। उन दोनों दोस्तों ने उससे पूछा कि उन दोनों में से कौन ठीक था। तो वह नाइट बोला — "वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।"

---

[19] The Two Muleteers – a folktale from Italy. Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book is available at hindifolktales@gmail.com .

[20] Translated for the word "Mule". Mule is a donkey-like animal.

[21] Satan or Devil

[22] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

शैतान में विश्वास रखने वाला आदमी बोला — "देखा न मैंने क्या कहा था।"

और उसने अपने दोस्त से उसका खच्चर ले लिया पर उसका दोस्त अभी भी इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं था कि शैतान ही सहायता करता है सो उन दोनों ने दोबारा शर्त लगायी और दोबारा किसी और से पूछने के लिये कहा।

इस बार उन्होंने एक ऐसे नाइट को अपना जज बनाया जो सफेद कपड़े पहने था। और क्योंकि वह भी शैतान ही था इसलिये उसने भी यही कहा कि वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।

इस तरह भगवान में विश्वास रखने वाले आदमी के पास से वह खच्चर भी जाता रहा और आखिर जो आदमी भगवान में विश्वास रखता था उसके हाथ से उसके सारे खच्चर निकल गये।

फिर भी भगवान में विश्वास रखने वाले ने हार नहीं मानी। वह बोला — "मेरा अभी भी यही विश्वास है कि मैं ठीक हूँ और इस बात पर मैं अपनी आखें तक शर्त पर लगा सकता हूँ।"

उसका दोस्त बोला — "ठीक है। तब हम एक और शर्त लगाते है। उस शर्त को अगर तुम जीत गये तो तुमको तुम्हारे सारे खच्चर वापस मिल जायेंगे और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपनी ऑखें दे दोगे।"

"ठीक है।"

तभी एक नाइट हरे रंग की पोशाक में उधर से गुजरा तो उन्होंने उससे पूछा कि कौन ठीक था। नाइट बोला — "यह बताना तो बहुत ही आसान है। जो तुमको सहायता करता है वह शैतान ही है।" और वह अपने घोड़े पर चढ़ता हुआ वहाँ से दौड़ गया।

इस तरह जो आदमी शैतान में विश्वास करता था उसने जो आदमी भगवान में विश्वास करता था उसकी आँखें ले लीं और उसको वहीं उसी देश में अन्धा कर के छोड़ कर चला गया।

अब वह अन्धा बेचारा इधर उधर घूमता रहा घूमता रहा। घूमते घूमते उसको एक गुफा मिल गयी। वह अपनी रात बिताने के लिये उस गुफा में घुस गया। उस गुफा में बहुत सारी झाड़ियाँ उगी हुई थीं। वह एक तरफ को आराम करने के लिये लेट गया।

अभी वह लेटा ही था कि उसने कई लोगों के उस गुफा में घुसने की आवाज सुनी। असल में उस दिन उस गुफा में सारे शैतानों की एक मीटिंग थी। इन शैतानों के सरदार ने हर एक से एक एक कर के यह सवाल किया कि उन्होंने पिछले दिनों में क्या हासिल किया।

उनमें से एक शैतान ने कहा कि वह वेश बदल कर गया और एक बेचारे को अपने सारे खच्चरों से ही नहीं बल्कि अपनी आँखें खोने पर भी मजबूर कर दिया।

शैतान का सरदार बोला — "बहुत अच्छे। उसकी आँखों की रोशनी अब कभी वापस नहीं आयेगी जब तक कि वह अपनी आँखों

पर इस घास के दो पत्ते न रखे जो यहाँ इस गुफा के मुँह के पास उगते हैं।"

सारे शैतान हँस पड़े और बोले — "क्या तुम दिखा सकते हो कि वह उस घास के भेद को कैसे ढूँढेगा? वह तो अन्धा है।"

वह बेचारा खच्चर हाँकने वाला तो वहीं छिपा बैठा था। यह सुन कर तो वह खुशी से उछल पड़ा कि उसकी आँखों की रोशनी इतनी आसानी से वापस आ सकती है।

पर फिर भी वह साँस रोके वहीं चुपचाप बैठा रहा और इस बात का इन्तजार करता रहा कि कब वे शैतान वहाँ से जायेंगे और कब वह घास तोड़ कर अपनी आँखों की रोशनी वापस पायेगा। पर वे शैतान तो एक न एक कहानी सुनाते ही रहे।

एक और शैतान बोला — "मैंने एक मछली की हड्डी रूस के राजा की बेटी के गले में फँसा दी और कोई उसको उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

बावजूद इसके कि राजा ने जो कोई भी उसके गले से वह हड्डी बाहर निकालेगा उसको वह बहुत सारा पैसा देगा कोई उस हड्डी को उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

और उसकी हड्डी कोई निकाल भी नहीं सकता क्योंकि उनको पता ही नहीं है कि इस काम के लिये उस लड़की के छज्जे पर लगी हुई खट्टे अंगूरों की बेल पर लगे उन अंगूरों का केवल तीन बूँद का रस चाहिये।"

शैतानों के सरदार ने कहा — "धीरे बोलो। पत्थरों की भी ऑखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं।"

सुबह होने से पहले पहले ही वे सब शैतान वहॉ से चले गये। तब वह खच्चर हॉकने वाला झाड़ियों में से निकला और उस घास की तरफ चला जिससे उसकी आखों की रोशनी वापस आ सकती थी।

उसको वहॉ वह घास मिल गयी और उसने उस घास के दो दो पत्ते अपने दोनों ऑखों की खाली जगह पर छुआ लिये। उसकी नजर वापस आ गयी और अब वह देखने लगा था। अपनी नजर वापस आने के बाद वह तुरन्त ही रूस चल दिया।

रूस के राजा के महल में उसकी बेटी के कमरे में बहुत सारे डाक्टर इकट्ठे बैठे थे पर कोई भी कुछ भी नहीं कर पा रहा था। जब लोगों ने एक मैले कुचैले और धूल से भरे खच्चर हॉकने वाले को उसकी ऑखें ठीक करने के लिये वहॉ आते देखा तो वे सब हॅस पड़े।

पर राजा बोला — "जब इतने सारे लोगों ने कोशिश कर ली और कोई मेरी बेटी को ठीक नहीं कर सका तो इस आदमी को भी एक मौका देने में क्या हर्ज है।"

सबने उसको कमरे में आने दिया। उसने कहा कि उसको कुछ देर के लिये राजकुमारी के कमरे में अकेला छोड़ दिया जाये। उसको

राजा की बेटी के साथ अकेला छोडने के लिये सब लोग उस कमरे से बाहर चले गये।

सबके चले जाने के बाद वह राजकुमारी के कमरे के छज्जे पर गया। वहॉ लगी खट्टे अंगूर की बेल से उसने अंगूर तोड़े और उनके रस की एक एक कर के तीन बूँदें उसके गले में डाल दीं। उस रस से उसके गले में फॅसी वह हड्डी गल गयी और राजा की बेटी हॅसती हुई उठ बैठी।

सोचो ज़रा कि राजा को कितनी खुशी हुई होगी। इस बात के लिये तो कोई भी इनाम छोटा था। राजा ने उसको सोने से ढक दिया तो राजा के लोगों ने उसका वह सोना उसके घर तक पहुँचाने में उसकी सहायता की।

उधर जब यह खच्चर हॉकने वाला बहुत दिनों तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी ने सोचा कि लगता है कि वह मर गया पर जब उसने उसको ज़िन्दा घर वापस आते देखा तो उसको लगा कि उसके पति का भूत आ गया है।

पर बाद में उसके पति ने अपनी पत्नी को अपनी पूरी कहानी सुनायी और उसको अपना खजाना भी दिखाया। उस पैसे से उसने एक बहुत बड़ा महल बनवाया और वे सब वहॉ आराम से रहने लगे।

उसका दोस्त भी उससे मिलने आया और वहाँ उसकी आँखों की रोशनी वापस आयी देख और उसको इतनी दौलत में खेलते देख उसने पूछा — "दोस्त, यह सब तुमने कैसे किया?"

उसके दोस्त ने अपनी सारी कहानी सुना दी और कहा — "मैंने तुमसे कहा नहीं था कि जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसकी सहायता करता है।"

उसके दोस्त ने अपने मन में सोचा — "आज मैं भी उस गुफा में जाऊँगा और देखूँगा कि मैं भी अमीर हो सकता हूँ क्या?"

सो उस रात वह भी उसी गुफा में जा कर छिप गया। और दिनों की तरह से उस रात को भी शैतान वहाँ पर अपनी मीटिंग करने के लिये आये।

जिन शैतानों ने उसके दोस्त की आखें ली थीं और रूस के राजा की बेटी के मुँह में मछली की हड्डी फँसायी थी उन्हीं शैतानों ने फिर अपने सरदार को बताया कि बड़ी अजीब सी बात है कि उस आदमी की आँखों की रोशनी भी वापस आ गयी और रूस के राजा की बेटी भी ठीक हो गयी।

शैतानों का सरदार बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि पत्थरों की भी आँखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं। ऐसा लगता है कि उस दिन कोई इस गुफा में था जो हमारी बातें सुन रहा था। जल्दी करो इस गुफा में आग लगा दो।"

सो सबने मिल कर वहॉ उगी सारी झाड़ियों में आग लगा दी। झाड़ियों के साथ साथ वहॉ बैठा वह आदमी भी जल कर मर गया। उसको शैतान पर विश्वास करने और दूसरे की अन्धाधुन्ध नकल करने का फल मिल गया था।

9 दो कुबड़े[23]

एक बार की बात है कि दो कुबड़े थे। एक थोड़ा कम कुबड़ा था दूसरा उससे कुछ ज़रा ज़्यादा कुबड़ा था। वे दोनों ही इतने गरीब थे कि उन दोनों में से किसी के पास एक पैनी भी नहीं थी।

एक दिन उनमें से एक कुबड़ा बोला — "मैं तो दुनियॉ में बाहर जा रहा हूँ क्योंकि यहॉ तो खाने के लिये कुछ भी नहीं है। हम लोग भूख से मर रहे हैं। मैं बाहर जा कर देखना चाहता हूँ कि शायद कुछ मिल जाये।"

दूसरे ने कहा — "ठीक है जाओ।"

सो वह कुबड़ा अपनी यात्रा पर चल दिया। ये दोनों कुबड़े परमा[24] के रहने वाले थे। जब वह कुबड़ा काफी दूर चला गया तो वह एक चौराहे पर आया जहॉ मेला लगा हुआ था। वहॉ हर चीज़ बिक रही थी। वहॉ एक आदमी था जो चीज़ बेच रहा था — "थोड़ी पारमेज़ान[25] खाओ।"

कुबड़े ने सोचा कि वह आदमी उसके लिये कह रहा है सो वह भाग कर एक ऑगन में छिप गया। जब एक बज गया तो उसने जंजीरों के खनखनाने की आवाज सुनी और शब्द सुनायी दिये –

---

[23] The Two Humpbacks. Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book is available at hindifolktales@gmail.com .

[24] Parma is a place in Italy

[25] Parmesan Cheese – a kind of processed cheese. It is a bit more expensive than other kinds of cheeses.

शनिवार और रविवार। उन्होंने ये शब्द कई बार दोहराये तो एक बार वह भी बोल पड़ा "और सोमवार।"

जो यह गा रहे थे वे बोले — "अरे हमारे गाने में यह कौन सुर मिला रहा है।" कह कर उन्होंने उसे ढूँढना शुरू किया तो उनको कुबड़ा छिपा हुआ मिल गया।

कुबड़ा बेचारा बोला — "ओ भले आदमियों मैं यहाँ तुम्हारा कोई नुकसान करने नहीं आया।"

वे बोले — "तुमने हमारे गीत में सुर मिलाया है हम तुम्हें इसके लिये इनाम देने आये हैं। आओ हमारे साथ आओ।"

उन्होंने उसको एक मेज पर लिटाया और उसका कूबड़ निकाल दिया उसका घाव भर दिया और उसको दो थैले भर कर पैसे दे दिये। फिर वे बोले — "अब तुम जा सकते हो।"

उसने उनको धन्यवाद दिया और अपना कूबड़ ठीक करा कर चला गया। तुम लोग खुद सोच सकते हो कि अब वह अपने आपको कितना तन्दुरुस्त समझ रहा होगा। वह अपनी जगह परमा वापस आ गया।

जब दूसरे कुबड़े ने उसे देखा तो चिल्लाया — "तुम तो मेरे दोस्त जैसे नहीं लग रहे हो। क्योंकि मेरे दोस्त की पीठ पर तो कूबड़ था। वह तो वहाँ नहीं है। ए क्या तुम मेरे वही दोस्त हो?"

पहला कुबड़ा बोला — "हाँ मैं तुम्हारा वही दोस्त हूँ।"

दूसरा कुबड़ा फिर बोला — "पर तुम मेरी बात तो सुनो। क्या तुम्हारे पहले कूबड़ नहीं था?"

"हॉ था। पर उन्होंने मेरा कूबड़ निकाल दिया और देखो मुझे ये दो थैले भर कर पैसे भी दिये। मैं तुम्हें अभी बताता हूॅ। मैं जब फलॉ फलॉ जगह पहुॅचा तो उन्होंने यह गाना शुरू ही किया था — "थोड़ा सा पारमेज़ान खा लो थोड़ा सा पारमेज़ान खा लो।"

यह सुन कर मैं इतना डर गया कि मैं फलॉ फलॉ जगह छिप गया। किसी खास समय पर मैंने जंजीरों के बजने की आवाजें सुनी और फिर सुना कुछ लोगों का गाना "शनिवार और रविवार"। जब वे इन शब्दों को दो तीन बार दोहरा चुके तो मैंने उसमें जोड़ा "और सोमवार"।

यह सुन कर उन्होंने मुझे ढूॅढा और पा लिया। क्योंकि मैंने उनका गाना बहुत अच्छा कर दिय था सो उन्होंने मुझे उसका इनाम देना चाहा। वे मुझे एक तरफ ले गये मेरा कूबड़ हटाया और मुझे दो थैले पैसे दिये।"

दूसरा कुबड़ा बोला — "हे भगवान। मैं भी वहॉ जाना चाहता हूॅ।"

"जाओ तुम वहॉ जरूर जाओ। विदा।"

सो वह दूसरा कुबड़ा भी वहीं चला गया था जहॉ पहला कुबड़ा गया था और ठीक वहीं जा कर छिप गया जहॉ उसका साथी जा कर छिपा था।

उसने भी जंजीरों की आवाज सुनी। उसने भी वह "शनिवार और रविवार और सोमवार वाला गाना कई बार सुना। कुछ देर बाद वह बोला "और मंगलवार।"

बस उसे सुनते ही वे तो नाराज हो गये तुरन्त ही चिल्लाये — "कौन है वह जिसने हमारा गाना बिगाड़ा। अगर हमें वह मिल जाये तो हम उसे फाड़ कर रख दें।"

उन्होंने उसको जल्दी ही ढूँढ लिया और उसको तब तक मारते रहे जब तक कि वे थक नहीं गये। फिर वे उसको उसी मेज पर ले गये जिस पर उसके साथी को ले गये थे। वे बोले — "वह कूबड़ उठा लो और इसके सामने वाले हिस्से में लगा दो।"

सो उन्होंने पहले वाले का कूबड़ उठाया और उसकी छाती पर लगा दिया और फिर उसको मार मार कर भगा दिया। वह घर गया तो उसका दोस्त चिल्लाया — "हे भगवान मुझ पर दया करो। तुम मेरे दोस्त नहीं हो। क्योंकि इसके तो सामने भी कूबड़ है। क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो।"

दूसरा दोस्त बोला — "मैं तो अपने उसी कूबड़ का बोझ उठाना नहीं चाहता था पर अब तो मुझे अपने कूबड़ के साथ साथ तुम्हारे कूबड़ का भी बोझ उठाना पड़ रहा है। और देखो कि मुझे तो पीटते पीटते भी अधमरा कर दिया गया है।"

उसके दोस्त ने कहा — "आओ दोस्त अन्दर आओ। चलो हम लोग पेट भर कर खाना खाते हैं। इस तरह अपना दिल न तोड़ो।"

इस तरह से वह रोज अपने दोस्त के साथ खाना खाता रहा। फिर शायद दोनों मर गये होंगे।

10 न्यायी और अन्यायी? कौन ज़्यादा अच्छा[26]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा रहता था जिसके दो बेटे थे। उसका बड़ा बेटा थोड़ा चालाक और अन्यायी था और दूसरा बेटा न्यायपूर्ण और नम्र था।

एक दिन उनके पिता मर गये तो बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा — "अब तुम यहाँ से चले जाओ क्योंकि मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। यह लो तीन सौ डकैट[27] लो और यह एक घोड़ा लो। बस यही तुम्हारे पिता की सम्पत्ति का तुम्हारा हिस्सा है। इसे ले लो और जाओ। क्योंकि इससे ज़्यादा तो मैं तुम्हारा कोई कर्जदार भी नहीं हूँ। और बस अब चले जाओ यहाँ से।"

छोटे भाई ने जो पैसा और घोड़ा उसको दिया गया था उसे ले कर घर छोड़ दिया। रास्ते में वह बोला — "हे भगवान देखो तो मेरी किस्मत ने मुझे कितना बड़ा राज्य दिया।"

कुछ दिन बाद इत्तफाक से दोनों भाई चलते चलते एक सड़क पर मिल गये। दोनों अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए कहीं जा रहे थे। छोटे भाई ने बड़े भाई को यह कह कर नमस्ते की "भगवान आपकी सहायता करे।"

---

[26] Justice or Injustice? Which is Best? A tale from the book "Folktales of Serbia" by Madam Csedomille. 1876. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com ["Gerechtigkeit und Ungerechtigkeit?" – Grimm No 16]

[27] Ducat is the name of currency used in Europe in olden times.

तो बड़ा भाई बोला — "तुम हमेशा भगवान के बारे में ही बात क्यों करते हो। आजकल अन्याय न्याय से बड़ा है।"

छोटे भाई ने जवाब दिया — "मैं आपसे शर्त लगाता हूँ कि जैसा कि आप कहते हैं कि अन्याय न्याय से बड़ा है ऐसा नहीं है।"

सो दोनों ने सौ सोने के ज़ैकिन्स[28] दॉव पर लगाये और यह तय किया कि वे इस बात के फैसले को उस आदमी से करवायेंगे जो कोई भी सड़क पर उनको पहली बार आता दिखायी देगा।

वे दोनों थोड़ी दूर तक चले तो उनको एक आदमी आता हुआ दिखायी दिया। वह साधु के वेश में एक शैतान था। उन दोनों ने उससे पूछा कि दोनों में से कौन अच्छा है न्यायी और अन्यायी।"

शैतान ने कहा "अन्यायी।" और वहॉ से चला गया। और इस तरह से भले भाई को अपने बड़े भाई को सौ ज़ैकिन्स देने पड़े।

उसके बाद उन्होंने सौ ज़ैकिन्स की एक और शर्त लगायी और फिर सौ ज़ैकिन्स की तीसरी बार शर्त लगायी और हर बार शैतान ने जो अपना वेश छिपाने में सफल हो जाता था और यही फैसला देता था कि अन्यायी न्यायी से ऊॅचा है।

इस तरह छोटे भाई का सारा पैसा और घोड़ा इस शर्त के मामले में ही खर्च हो गया। उसने फिर हाथ उठा कर भगवान को धन्यवाद देते हुए कहा — "हे भगवन तेरा बहुत बहुत धन्यवाद है कि अब मेरे पास कोई पैसा नहीं है। पर अभी मेरे पास ऑखें हैं। अब मैं

[28] Zechin was the then currency of Europe.

अपनी ऑखों की शर्त लगा कर यह साबित करने की कोशिश करूँगा कि न्याय अभी भी अन्याय से ऊँचा है।"

सो उसके अन्यायी भाई ने बिना किसी से पूछे अपने हाथ में अपना चाकू ले कर अपना फैसला कर लिया। उससे उसने अपने छोटे भाई की ऑखें निकाल लीं और फिर बोला — "अब तेरे ऑखें नहीं हैं। अब न्यायी ही तेरी सहायता करेगा।"

पर न्यायपूर्ण भाई ने फिर भगवान को धन्यवाद देते हुए कहा — "मैंने भगवान के न्याय के लिये अपनी ऑखें खो दीं पर इससे पहले कि तुम मुझे यहॉ से छोड़ कर जाओ ओ मेरे प्यारे भाई मेरे घाव धोने के लिये और गला तर करने के लिये मुझे थोड़ा सा पानी दे दो और मुझे यहॉ से दूर किसी पाइन के पेड़ के नीचे ले चलो जहॉ कोई नदी बहती हो।"

अन्यायी भाई ने वैसा ही किया कि उसने उसको थोड़ा पानी ला कर दे दिया और उसको एक पाइन के पेड़ के नीचे बिठा दिया। वह अभागा बेचारा वहीं जमीन पर ही बैठा रहा।

काफी रात गये वहॉ नदी में नहाने के लिये कुछ परियॉ आयीं। उनमें से एक ने दूसरी से कहा — "क्या तुम्हें मालूम है कि राजा की बेटी को कोढ़ हो गया है। राजा ने देश विदेश के डाक्टरों को उसके ठीक करने के लिये बुलवाया है।

पर काश राजा अगर यह जानता होता कि इस पानी से जिसमें हम नहा रहे हैं वह अगर अपनी बहिन को नहला दे तो चौबीस घंटों के अन्दर अन्दर उसका सारा कोढ़ ठीक हो जायेगा।

इसी तरह से अगर कोई लॅगड़ा हो लूला हो बहरा हो या अन्धा हो तो वह भी इस पानी में नहाने से ठीक हो सकता है।"

जब सुबह हो गयी और मुर्गे बोलने लगे तो वह भला भाई अपने फैले हुए हाथों से महसूस कर कर के उस नदी के पास पहुॅच गया। उसके पानी से अपनी ऑखें धो लीं। तुरन्त ही उसकी ऑखों में रोशनी आ गयी।

उसने एक बर्तन में पानी भरा और राजा के महल पहुॅच कर उसके पहरेदारों से कहा कि वह राजकुमारी जी को उनके कोढ़ से ठीक करने के लिये आया है। अगर वह मुझे एक बार कोशिश कर लेने दें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूॅ कि वह इस रोग से चौबीस घंटे में ही ठीक हो जायेंगी।

जब राजा ने यह सुना तो उसने उसको तुरन्त ही अन्दर बुला लिया जहॉ वह लड़की लेटी हुई थी। वह पहुॅच कर उसने उसको तुरन्त ही नदी के पानी से नहला दिया। एक दिन और एक रात के बाद तो लो वह लड़की तो बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गयी।

राजा इस बात से बहुत खुश हुआ उसने अपना आधा राज्य अपने बेटे को दे दिया और आधा राज्य उस भाई को दे कर उससे

अपनी बेटी की शादी कर दी। इस तरह से वह राजा का दामाद बन गया और उसके बाद राज्य का पहला आदमी[29] बन गया।

कुछ ही दिनों में यह खबर सारे देश में फैल गयी। साथ में सुनी यह खबर उसके अन्यायी भाई ने भी। उसने तुरन्त ही भॉप लिया कि यह तो मेरा न्यायपूर्ण भाई ही था जिसने यह सब किया।

उसकी यह अच्छी किस्मत उसी पाइन के पेड़ के नीचे खुली होगी। सो वह खुद इस बात को पक्का करने के लिये उस पेड़ के नीचे पहुँच गया कि उस पाइन के पेड़ के नीचे उसकी भी किस्मत बदलती है या नहीं।

वह अपने साथ एक पानी भरा बर्तन भी ले गया। उसने अपने आप ही अपनी ऑखें निकाल कर रख लीं। जब अँधेरा सा हुआ तो वहॉ परियॉ फिर से आयीं। जब वे उस नदी में नहा रही थीं तो राजा की बेटी के ठीक होने के बारे में बातें कर रहीं थीं।

"यह तो हो ही नहीं सकता कि अगर कोई हमारी बात नहीं सुन रहा हो तो वह राजकुमारी ठीक हो जाये। हो सकता है कि आज भी कोई हमारी बात यहॉ सुन रहा हो। चलो देखते हैं।"

सो वे परियॉ घूम घूम कर चारों तरफ ढूँढने लगीं। ढूँढते ढूँढते वह उसी पाइन के पेड़ के नीचे आ गयीं जिसके नीचे वह अन्यायी भाई बैठा हुआ अपनी किस्मत के खुलने का इन्तजार कर रहा था।

[29] A President is usually called "The First Man" and his wife is called "First Woman". This expression is also used in the same context as after the King he was the new King of that kingdom.

उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसके शरीर के चार टुकड़े कर के उन्हें चारों दिशाओं में फेंक दिया।

सो आखिर उसकी चालाकी उसके काम नहीं आयी। उसने तो अपनी ज़िन्दगी भी गॅवायी। इसलिये न्याय ही अन्याय से अच्छा है।

11 एक लड़का और एक जलपरी[30]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पॉच नौर्स देशों में से स्वीडन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि स्वीडन देश के गॉव में तीन लड़के थे जो अपने माता पिता के मरने को बाद अकेले रह गये थे।

हालॉकि उनके माता पिता उनके लिये कुछ ज़्यादा छोड़ कर नहीं गये थे पर फिर भी जो कुछ भी वे छोड़ गये थे अगर वे उसको ठीक से बॉट लेते तो वह उनके लिये काफी था।

पर बड़े वाले दो भाई उसे बॉटना नहीं चाहते थे। सबसे बड़े भाई ने रहने के लिये घर ले लिया और दूसरे भाई ने घर के अन्दर का सारा सामान ले लिया।

[30] The Boy and the Water Sprite – a folktale from Sweden, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=64 Retold and written by Mike Lockett.

उन दोनों को जो कुछ पैसा मिला वह उन दोनों ने बॉट लिया और साथ में उनके पिता के पास जो जमीन का टुकड़ा था वह भी उन दोनों ने ले लिया और अपने छोटे भाई को उसे कुछ भी देने से मना कर दिया।

इस तरह उन दोनों बेरहम भाइयों ने अपने सबसे छोटे भाई को अपने पिता की जायदाद से, उसके पैसे से, उसके घर से सबसे दूर कर दिया।

तो उसने अपने भाइयों से पूछा — "तुम लोगों ने तो सब कुछ ले लिया अब मैं कैसे रहूँगा?"

उसका सबसे बड़ा भाई बोला — "तुम तो होशियार हो। लो इसको लो और इससे गुजारा करो।" कह कर उसने घर के एक कोने में पड़ा पाया एक रस्सा दरवाजे के बाहर फेंक दिया।

छोटे भाई ने सोचा कि यह रस्सा तो बड़े काम की चीज़ है सो उसने वह रस्सा उठाया और उसको ले कर वहॉ से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आया। वहॉ उसने उस रस्से के एक हिस्से को खोल कर कई छोटी रस्सियॉ बनायीं। फिर उसने उनको एक खास तरीके से जोड़ कर एक छोटी रस्सी बनायी, एक बीच के साइज़ की रस्सी बनायी और एक लम्बी रस्सी बनायी।

वह लड़का छोटी वाली रस्सी से छोटे साइज़ का फन्दा बना कर छोटी साइज़ की गिलहरी पकड़ता। बीच के साइज़ की रस्सी का

बीच का फन्दा बना कर बीच के साइज़ के जानवर पकड़ता जैसे कि खरगोश।

फिर वह लड़का जंगल में एक झील के किनारे पहुँच गया।

वहाँ उसने एक अँधेरी गुफा में एक बड़ा भालू जाता देखा। उसने अपनी लम्बी वाली रस्सी निकाली और भालू पकड़ने के लिये उसका एक बड़े साइज़ का जाल बनाने बैठ गया।

जैसे ही वह बड़ा जाल बनाने के लिये झील के पास बैठा कि एक जलपरी पानी में से बाहर निकली तो उसने एक लड़के को वहाँ बैठे देखा। उसने उसको देखा, और देखा, और देखा पर वह यह नहीं जान सकी कि वह लड़का कर क्या रहा था।

वह बूढ़ी जलपरी पानी में से बाहर निकल कर उस लड़के के पास आने और उससे बात करने के लिये या उसको खाने के लिये काफी बड़ी और काफी भारी थी। और वह लड़का पानी के बाहर बैठा था।

सो वह बूढ़ी जलपरी फिर से पानी के अन्दर चली गयी और वहाँ से उसने अपने बेटे को यह देखने के लिये भेजा कि उसका बेटा वहाँ जा कर यह देख कर आये कि वह लड़का उस रस्सी से क्या कर रहा था।

उसका वह बेटा इतना छोटा था कि वह झील के किनारे आसानी से घूम सकता था सो वह झील के बाहर निकला और उस लड़के से पूछा कि वह रस्सी से क्या कर रहा था।

इस पर लड़के ने उसको चिढ़ाया कि वह एक ऐसा जाल बना रहा था जिससे कि वह पूरी झील को बॉध सके। इससे फिर कोई न तो उसकी इजाज़त के बिना झील के अन्दर जा सकेगा और न ही उसकी इजाज़त के बिना झील के बाहर आ सकेगा।

जलपरी का बेटा तुरन्त ही झील में वापस चला गया और जो कुछ उस लड़के ने उससे कहा था अपने पिता को जा कर बताया।

पिता को यह सुन कर चिन्ता हुई वह बोला — "अगर कोई झील में आ जा नहीं सकेगा तो हम खाना कैसे खायेंगे। तुम ऊपर जाओ और उस लड़के से कहना कि वह तुमको पेड़ के ऊपर दौड़ कर पकड़े।

जब तुम पेड़ के ऊपर पहुँच जाओ तो उसके वहॉ आने का इन्तजार करना और जब वह ऊपर आ कर तुमको पकड़े तो उसको झील में धक्का दे देना। हम उसको नाश्ते में खा लेंगे।"

जलपरी के बेटे ने वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने उससे करने को कहा था। वह वापस लड़के के पास गया और उसको पेड़ पर चढ़ने और उसको पकड़ने के लिये ललकारा।

लड़का बोला कि अभी उसको बहुत काम है इसलिये वह खुद तो अभी उसके साथ दौड़ नहीं सकता पर उसका एक छोटा सा दोस्त था जो उसके साथ दौड़ सकता था।

इतना कह कर उसने अपने जाल में फँसी एक छोटी सी गिलहरी खोली और उसको बोला — "भाग, गिलहरी भाग, एक दो तीन.... ।"

वह गिलहरी तुरन्त भाग कर पास वाले पेड़ पर चढ़ गयी और जलपरी का वह बेटा तो वहीं का वहीं खड़ा रह गया। वह बेचारा फिर अपने पिता के पास गया और जो कुछ हुआ था कह सुनाया।

यह सुन कर उसके पिता ने उससे कहा — "तुम फिर वापस जाओ और उससे फिर अपने साथ दौड़ लगाने को कहो और जब वह तुम्हारे साथ दौड़ते दौड़ते थक जाये तो उसको झील में धकेल देना। फिर हम उसको थोड़ा थोड़ा कर के खा सकते हैं।"

जलपरी का बेटा फिर चल दिया और उसने फिर उस लड़के को दौड़ के लिये ललकारा।

वह लड़का बोला — "मैंने तुमसे कहा न कि मुझे अभी बहुत काम है इसलिये मैं तुम्हारे साथ अभी नहीं दौड़ सकता पर मेरा एक और छोटा सा दोस्त है जो तुम्हारे साथ दौड़ सकता है।"

कह कर उसने अपना पकड़ा हुआ एक खरगोश खोला और उसको उस लड़के के साथ दौड़ने के लिये भेज दिया — "भाग, खरगोश भाग, एक दो तीन.... ।"

और खरगोश तो जैसे ही खुला वैसे ही वह तेज़ी से भाग लिया। अब क्या था खरगोश आगे आगे और वह लड़का उसके

पीछे पीछे। बहुत जल्दी ही वह लड़का खरगोश से बहुत पीछे रह गया।

यह सब देख कर तो वह लड़का बहुत परेशान हुआ। वह फिर वापस अपने पिता के पास पहुँचा और जा कर पिता को सारा हाल सुनाया।

पिता ने कहा कि अबकी बार जा कर तुम उसको कुश्ती के लिये ललकारो और क्योंकि तुम मेरे बेटे हो इसलिये तुम बहुत ताकतवर हो। तुम जल्दी ही उसको जमीन पर पटक दोगे।

जब तुम उसको जमीन पर पटक दो तो उसको उठा कर झील में डाल देना। फिर हम उसको साथ साथ खा लेंगे।

यह सुन कर वह लड़का फिर झील के ऊपर आया और उस लड़के को अबकी बार कुश्ती के लिये ललकारा।

वह लड़का कुछ गुस्से में बोला — "मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि मुझे अभी बहुत काम है इसलिये मैं खुद तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर सकता। मेरे दादा जी उस गुफा में सो रहे हैं तुम जा कर उनको कुश्ती के लिये ललकार सकते हो।

पर कुश्ती लड़ने से पहले तुमको उन्हें जगाना पड़ेगा। उस गुफा में चले जाओ और वहाँ जा कर उनके सिर पर ज़ोर से मारना। बस वह उठ जायेंगे।"

वह जलपरी का बेटा उस अँधेरी गुफा में गया और एक बड़ी सी परछाईं जमीन पर पड़ी देखी। उसने उससे कहा — "आओ

कुश्ती लड़ते हैं।" पर वह परछाईं तो वहाँ खर्राटे भरती रही बोली नहीं।

उसने उससे फिर कहा — "आओ न कुश्ती लड़ते हैं।"

पर वह परछाईं फिर भी वहाँ खर्राटे भरती रही उठी ही नहीं। इस पर उसने उसका हाथ पकड़ कर उसके कान पर मारा।

इससे वह भालू जाग गया और अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया। उसने उस जलपरी के बेटे को एक ही धक्के में गुफा के बाहर जंगल के पार वापस झील में फेंक दिया।

जलपरी का बेटा फिर अपने पिता के पास गया और बोला — "यह लड़का तो हम लोगों से बहुत ज़्यादा ताकतवर लगता है। उसके दादा ने तो मुझे इतनी ज़ोर से धक्का मारा कि मैं तो झील के बीच में ही आ गिरा। ऐसे तो हम उस लड़के को कभी नहीं जीत सकते पिता जी।"

पिता ने कहा — "ठीक है, तुम एक बार फिर उस लड़के के पास जाओ और उससे पूछो कि वह हम लोगों को यहाँ छोड़ने का क्या लेगा। हम नहीं चाहते कि वह हमारी झील को बाँधे।"

सो वह बेटा फिर उस लड़के के पास गया और उससे पूछा कि वह उनको वहाँ छोड़ने का कितना पैसा लेगा।

लड़के ने अपना टोप उतार कर उलटा कर के उसके सामने रख दिया और बोला — "बस यह टोप भर कर।"

वह बेटा फिर से अपने पिता के पास दौड़ा गया और वहॉ जा कर कुछ सिक्के बटोरने में उसकी सहायता करने लगा जो सालों से झील की तली में इकट्ठे हो गये थे।

इधर जब जलपरी का बेटा चला गया तब उस लड़के ने अपने टोप में एक छेद कर लिया और उस टोप को एक गहरे गड्ढे के ऊपर रख लिया।

उधर जलपरी के बेटे ने जितने सिक्के वह सोच सकता था कि उस टोप को भरने के लिये काफी होंगे उतने सिक्के बटोरे और झील के ऊपर आ कर उस लड़के के टोप में डाले पर वे तो बस उस टोप की तली ही ढक सके।

वह फिर झील में गया और फिर से बहुत सारे सिक्के उठा कर लाया और उस लड़के के टोप में डाले पर फिर भी उसका टोप नहीं भरा। जलपरी के बेटे ने जा कर यह अपने पिता से कहा कि वह कई बार सिक्के उस लडके के टोप में डाल चुका है पर उसका टोप है कि वह तो भरता ही नहीं।

उसके पिता ने कहा — "उससे जा कर कहो कि हमारे पास इतना ही पैसा है।" और यह कह कर उसने एक सिक्के भरा एक बैरल[31] झील के किनारे पर फेंक दिया।

[31] A barrel is a wooden drum which can contain 26 US Gallons to 52 US Gallons liquid – see its picture above.

बेटा फिर झील के ऊपर आया और उस लड़के से बोला — "मेरे पिता जी कहते हैं कि हमारे पास इतना ही पैसा है। इसको ले लो और यहॉ से जाओ और हमको छोड़ दो।"

लड़के ने वायदा किया कि वह अब झील को नहीं बॉधेगा और जलपरी का बेटा यह खुशखबरी ले कर तुरन्त ही अपने पिता के पास दौड़ गया।

उधर लड़के ने सॅभाल कर अपनी रस्सियों के सारे जाल समेटे ताकि उसमें कोई जानवर फॅस न जाये। फिर उसने अपना वह सिक्के वाला गड्ढा मिट्टी से भर दिया और इस तरह से अपना कुछ पैसा वहॉ छिपा दिया।

उसके बाद उसने अपना टोप अपने सिर पर रखा और सिक्कों से भरा वह बैरल लुढ़काता हुआ वह पैसा दिखाने के लिये अपने भाइयों के घर चला।

उसके पास उतना सारा पैसा देख कर आश्चर्य से उसके भाइयों ने पूछा — "तुमको इतना सारा पैसा कहॉ से मिला?"

उसने जवाब दिया — "जानवर पकड़ कर। मुझे तो अपने माता पिता से केवल एक रस्सी ही मिली थी जो तुम लोगों ने मुझे दी थी। सो इस रस्सी से मैंने जानवर पकड़ने के जाल बनाये और झील के पास जो जंगल है वहॉ जा कर जानवर पकड़े।"

वे दोनों एक साथ बोले — "तो तुम यह घर और जमीन ले लो और यह रस्सी हमको दे दो।"

कह कर उन दोनों भाइयों ने कानूनी कार्यवाही कर के वह घर और जमीन अपने छोटे भाई के नाम कर दी और वह रस्सी उससे खुद ले ली।

रस्सी ले कर वे जंगल की तरफ चले गये ताकि वे वहॉ जानवर पकड़ सकें। उसके बाद वे फिर कभी अपने छोटे भाई को परेशान करने के लिये नहीं लौटे।

हो सकता है कि वे अभी भी जंगल में जानवर पकड़ रहे हों। या फिर झील की जलपरी के मेहमान बन गये हों। या फिर उनको वह गुफा वाला भालू ही खा गया हो – कुछ भी हो सकता है, है न?

12 दो सौतेली बहिनें[32]

यह लोक कथा यूरोप के नौर्स देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। नौर्स देशों में यूरोप के पॉच देश[33] आते हैं।

एक बार की बात है कि एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। यह उन दोनों की दूसरी शादी थी पर उन दोनों की उनकी पहली शादी से एक एक लड़की भी थी।

स्त्री की बेटी बहुत ही सुस्त और आलसी थी और घर में कोई भी काम नहीं करती थी जबकि आदमी की बेटी बहुत चुस्त चालाक थी। पर किस्मत की बात कि उसका कोई भी काम उसकी सौतेली मॉ को पसन्द नहीं आता था।

इसलिये दोनों मॉ बेटी आदमी की बेटी को घर से बाहर निकालना चाहती थीं।

सो एक दिन ऐसा हुआ कि दोनों लड़कियॉ सूत कातने के लिये बाहर गयीं और एक कुँए के पास बैठ कर सूत कातने लगीं। स्त्री की बेटी के पास तो कातने के लिये रुई थी पर आदमी की बेटी के पास कोई रुई नहीं थी। उसके पास बस कुछ कॉटे थे।

---

[32] The Two Stepsisters – A folktale from Norse countries, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn27.htm

[33] Norse, Nordic or Scandinavian coutries are five. They are locted in the far North of Europe continent. These five countries are – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden.

स्त्री की बेटी ने कहा – "पता नहीं ऐसा कैसे होता है कि तुम बहुत जल्दी ही अपना काम खत्म कर लेती हो पर मैं तुम्हारी बराबरी नहीं कर पाती।"

उसके बाद दोनों ने यह तय किया कि जिस किसी का सूत पहले टूटेगा वह कुँए में नीचे उतरेगा। सो उन्होंने अपना अपना सूत कातना शुरू कर दिया पर जब वे सूत कात रही थीं तो आदमी की बेटी का सूत टूट गया और उसको कुँए में नीचे उतरना पड़ा।

जब वह कुँए की तली में पहुँची तो उसने अपने चारों तरफ चमकीली हरे रंग की शराब[34] देखी। पर उससे उसको कोई चोट नहीं पहुँची।

वह उस पर थोड़ी ही दूर चली थी कि उसके सामने एक हैज[35] आयी जिसको उसे पार करना था। हैज बोली — "ओह मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरे ऊपर ज़ोर से मत चलना। मैं फिर कभी तुम्हारी सहायता करूँगी।"

सो वह उससे कुछ दूर हट कर चलने लगी और इतनी दूर हट कर चली कि उसने उसकी एक डंडी भी नहीं छुई। वह थोड़ी दूर

[34] Translated for the word "Mead" – Mead is an alcoholic beverage created by fermenting honey with water, sometimes with various fruits, spices, grains, or hops etc.

[35] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

और चली कि उसको एक गाय मिली जो अपने सींगों पर दूध निकालने वाली एक बालटी लिये इधर उधर घूम रही थी।

वह एक बहुत सुन्दर और बड़ी गाय थी और उसके थन दूध से भरे हुए थे। गाय बोली — "मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरा दूध दुह दो। मेरे थनों में बहुत दूध भरा है। तुम जितना चाहो उतना पी लो और बाकी बचा हुआ मेरे खुरों पर डाल दो। फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करती हूँ या नहीं।"

सो आदमी की बेटी ने वैसा ही किया जैसा कि गाय ने उससे करने के लिये कहा था। उसने बालटी गाय के सींगों से उतारी और उसका दूध दुहने बैठ गयी।

जैसे ही उसने गाय के थनों को हाथ लगाया गाय के थनों से दूध की धारा बह कर बालटी में गिरने लगी। पहले तो उसने खूब पेट भर कर गाय का दूध पिया फिर बाकी बचा हुआ दूध उसने उसके खुरों पर फेंक दिया और दूध दुहने वाली बालटी को उसके सींगों पर लटका दिया।

वह फिर आगे चल दी। आगे चल कर उसको एक भेड़ मिला। उसके ऊपर बहुत लम्बी लम्बी ऊन थी। वह नीचे तक लटक रही थी और उसके पीछे पीछे जमीन पर घिसट रही थी। उसके सींगों पर एक बड़ी सी कैंची रखी हुई थी।

भेड़ उस लड़की को देख कर बोला — "ओह ज़रा मेरी यह ऊन काट दो क्योंकि मैं इसको बहुत देर से घसीटते हुए ही इधर से

उधर घूम रहा हूँ। यह ऊन जहाँ से भी इसको जो कुछ भी मिलता है वही पकड़ लेती है।

इसके अलावा यह इतनी गर्म है कि इसकी गर्मी से मेरा तो बस दम ही घुटा जा रहा है। जब तुम मेरी ऊन काट लो तो जितनी ऊन तुम्हें चाहिये तुम ले लेना और बाकी बची हुई ऊन मेरी गर्दन के चारों तरफ लपेट देना। फिर देखना कि मैं तुम्हारी किसी दिन सहायता करता हूँ या नहीं।"

आदमी की लड़की तो इसकी सहायता करने को तुरन्त ही तैयार हो गयी। भेड़ उसकी गोद में चुपचाप लेट गया और उसने उसकी सारी ऊन इतनी सफाई से काट दी कि उसकी खाल पर एक भी खरोंच नहीं आयी।

फिर उसने जितनी उससे ली जा सकी उतनी ऊन ले ली और बाकी की ऊन उस भेड़ की गर्दन में लपेट दी। यह सब कर के वह फिर आगे चली।

आगे चल कर उसको एक सेब का पेड़ मिला। उस पेड़ की सारी शाखें फलों के बोझ से नीचे जमीन तक झुकी जा रही थीं और एक पतले से खम्भे से चिपकी हुई थीं।

वह चिल्लाया — "ओह मेहरबानी कर के मेरे सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखें थोड़ी सीधी हो सकें। क्योंकि इस तरह से बहुत देर

तक टेढ़े खड़े होना बहुत ही मुश्किल काम है। पर जब तुम मेरी शाखें झुकाओ तो इनको बहुत ज़ोर से मत झुका देना।

फिर उसके बाद जितने सेब तुम खाना चाहो उतने तुम खा लेना और बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के पास ही डाल देना। और फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करता हूँ या नहीं।"

सो इसने जितने सेब उसके हाथों से टूट सकते थे उतने सेब उसने उस पेड़ से अपने हाथों से तोड़ दिये। फिर उसने खम्भा उखाड़ लिया और उससे और सेब तोड़ लिये। उसने पेट भर कर सेब खाये और बाकी बचे हुए सेब उस पेड़ की जड़ में ही डाल दिये।

यह कर के अब वह फिर आगे चली। अबकी बार वह बहुत देर तक चलती रही। आखिर वह एक खेत पर बने घर में आ पहुँची। वहाँ ट्रौल का सरदार[36] अपनी बेटी के साथ रहता था।

वह उस घर के अन्दर चली गयी और अन्दर जा कर वहाँ रहने के लिये जगह माँगी। बूढ़ी जादूगरनी बोली — "ओह यहाँ कोशिश करने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि हमारे पास कई नौकरानियाँ आयीं पर कोई भी ठीक नहीं थी।"

[36] Chief of Trolls – a troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

पर उस लड़की ने उनसे इतनी दया भरी प्रार्थना की कि उन्होंने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह पहले उसका काम देखेंगे फिर उसको पक्की नौकरी पर रखेंगे। सो आखिरकार उन्होंने उसको रख लिया।

उन्होंने उसको एक चलनी दी और उसमें पानी भर कर लाने के लिये कहा। हालॉकि उसको यह बहुत अजीब लगा कि वह चलनी में पानी भर कर लाये फिर भी वह उसको ले कर उसमें पानी लाने के लिये चल दी।

जब वह कुँए के पास आयी तो वहॉ बैठी छोटी छोटी चिड़ियॉ गाने लगीं —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

उस लड़की ने ऐसा ही किया। उसने देखा कि अब वह उसमें पानी भर सकती थी क्योंकि अब उस चलनी के छेद बन्द हो चुके थे। वह उस पानी को ले कर घर पहुँची तो बूढ़ी जादूगरनी ने उससे कहा — "यह पानी तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उससे गायों के बाड़े में जाने के लिये कहा कि वह वहॉ जाये और गायों का गोबर साफ करे और उनका दूध दुह कर ले कर आये।

पर जब वह वहॉ गयी तो उसको वहॉ एक भूसा उठाने वाला ही मिला जो इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकती थी उससे काम तो वह कैसे करती।

वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे या उस भूसा उठाने वाले का भी वह क्या करे। पर छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया कि वह झाड़ू ले ले और उससे थोड़ा सा गोबर चारों तरफ उछाल दे तो बाकी बचा हुआ गोबर उसके पीछे पीछे अपने आप ही उछल कर बाहर चला जायेगा। सो उसने ऐसा ही किया।

जैसे ही उसने झाड़ू से ऐसा किया गायों का बाड़ा इतना साफ हो गया जैसे अभी अभी बुहारा गया हो और धोया गया हो।

अब उसको गायों का दूध निकालना था पर वे सब इतनी बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको छूती तो वे उसको लात मारतीं। वे तो उसको अपने पास भी नहीं आने दे रही थीं दूध दुहाना तो दूर।

चिड़ियों ने बाहर फिर गाया — "चिड़ियों के पीने के लिये एक छोटी सी बूँद दूध की एक छोटा सा खाना।" सो उसने वही किया।

किसी तरह से उसने एक गाय का एक बूँद दूध दुहा और उसे चिड़ियों को पिला दिया। चिड़ियों के दूध पीते ही सारी गायें सीधी खड़ी हो गयीं और उन्होंने उस लड़की को अपना दूध दुहने दिया। न तो उन्होंने उसको लात मारी और न ही वे बहुत ज़्यादा हिली डुलीं। यहॉ तक कि उन्होंने तो अपनी एक टॉग भी नहीं उठायी।

इसलिये जब जादूगरनी ने उसको दूध लाते आते देखा तो वह चिल्लायी — "यह दूध तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उसको कुछ काले रंग की ऊन दी और कहा कि वह उसको धो कर सफेद कर लाये।

अब उस लड़की को तो पता ही नहीं था कि वह उस काली ऊन को सफेद कैसे करे। फिर भी उसने कुछ कहा नहीं और वह ऊन उससे ले कर कुँए की तरफ चल दी।

वहाँ उन छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया और उससे कहा कि वह उस ऊन को पास के गड्ढे में डुबो दे। उस लड़की ने ऐसा ही किया। जैसे ही उसने उस ऊन को उस गड्ढे में डुबोया और बाहर निकाला तो वह ऊन तो बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद थी।

वह उस ऊन को ले कर जादूगरनी के पास पहुँची। जैसे ही वह जादूगरनी के पास पहुँची तो जादूगरनी तो यह देख कर फिर चिल्ला पड़ी — "ओह तुमको तो रखना ठीक नहीं है। तुम तो सब कुछ कर सकती हो। और आखीर में तो तुम मेरी ज़िन्दगी का रोग ही बन जाओगी। अच्छा तो यही है कि तुम यहाँ से चली जाओ। लो यह अपनी मजदूरी लो और जाओ।"

फिर बूढ़ी जादूगरनी ने तीन सन्दूकची निकालीं – एक लाल एक हरी और एक नीली और उनको उस लड़की को दिखाते हुए बोली — "तुम अपनी मजदूरी के लिये इनमें से कोई सी भी एक सन्दूकची ले लो। जो भी तुम्हें अच्छी लगे।"

अब उस लड़की को तो पता नहीं था कि वह उनमें से कौन सी सन्दूकची चुने पर तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

"तुम लाल सन्दूकची मत लो और तुम हरी सन्दूकची भी मत लो। तुम नीली सन्दूकची ले लो जिसमें तुमको तीन क्रास एक लाइन में रखे दिखायी देंगे। हमने उनके निशान देखे हैं इसलिये हमको यह मालूम है।"

सो जैसा कि चिड़ियों ने उससे अपने गाने में कहा था उसने नीले रंग की सन्दूकची जादूगरनी से ले ली। बूढ़ी जादूगरनी फिर चिल्लायी — "बुरा हो तेरा। अब देखना अगर मैं तुझको इसके लिये कोई सजा न दूँ तो।"

जैसे ही आदमी की बेटी अपनी नीली सन्दूकची ले कर चली बूढ़ी जादूगरनी ने उसके पीछे लोहे की एक जलती हुई सलाख फेंक कर मारी पर वह दरवाजे के पीछे की तरफ कूद गयी और वहाँ जा कर छिप गयी।

इससे वह सलाख उसको छू भी न सकी। क्योंकि उसकी दोस्तों यानी छोटी छोटी चिड़ियों ने उसे पहले ही बता दिया था कि उस सलाख से उसे कैसे बचना है।

इसके बाद वह वहाँ से जितनी तेज़ चल सकती थी चल दी। पर जब वह सेब के पेड़ के पास पहुँची तो उसने अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी। यह आवाज उस जादूगरनी की और उसकी बेटी के आने की

आवाज थी। यह देख कर वह लड़की तो इतनी घबरा गयी और डर गयी कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

कि तभी उसने सेब के पेड़ की आवाज सुनी — "तुम यहॉ मेरे पास आओ ओ लड़की, क्या तुम सुन रही हो? मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम मेरे साये में आ कर छिप कर खड़ी हो जाओ क्योंकि अगर उन्होंने तुमको देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुमसे ले लेंगी और तुमको फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो वह उस सेब के पेड़ के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहॉ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी वहॉ आ पहुँचीं।

बूढ़ी जादूगरनी ने सेब के पेड़ से पूछा — "ओ सेब के पेड़, क्या तुमने किसी लड़की को यहॉ से जाते हुए देखा है?"

सेब का पेड़ बोला — "हॉ हॉ मैंने देखा है। एक लड़की यहॉ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहॉ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की सेब के पेड़ के नीचे से निकली और आगे चल दी।

वह जब तक भेड़ के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज

सुनी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी।

वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे।

कि तभी उसने भेड़ की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरी ऊन के नीचे छिप जा। इस तरह से वह तुझे देख नहीं पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे छीन लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की भेड़ की ऊन के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहाँ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ आ पहुँची।

बूढ़ी जादूगरनी भेड़ से बोली — "ओ भेड़ क्या तूने यहाँ से किसी लड़की को जाते देखा है?"

भेड़ बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है वह यहाँ से एक घंटा पहले ही गयी है। पर वह इतनी तेज़ भागी गयी है कि तुम उसे कभी नहीं पकड़ सकतीं।"

यह सुन कर जादूगरनी वापस अपने घर लौट गयी। उसके बाद वह लड़की भेड़ की ऊन के नीचे से निकली और आगे चल दी।

पर जब तक वह गाय के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी। वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी फिर समझ में नहीं आया कि वह अब क्या करे।

कि इतने में उसने गाय की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे थनों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे ले लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की गाय के थनों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने गाय से पूछा — "ओ गाय, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

गाय बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है। एक लड़की यहाँ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की गाय के थनों के नीचे से निकल आयी और आगे चल दी।

चलते चलते वह हैज के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

वह समझ गयी कि यह उसी बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी के आने की आवाज है। अब वह क्या करे। अबकी बार तो बस उसकी जान ही निकलने वाली थी। पर वह करे क्या यह उसकी समझ में नहीं आया।

कि इतने में उसने हैज की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे पत्तों और टहनियों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेंगी। क्योंकि अगर उन्होंने तुझे देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुझसे ले लेंगी और तुझे फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो लड़की हैज के पत्तें और टहनियों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने हैज से पूछा — "ओ हैज, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

हैज बोली — "नहीं मैंने तो किसी लड़की को यहाँ से जाते नहीं देखा।" और इस बीच उसने आपको इतना बड़ा और ऊँचा कर लिया कि उसको पार करने के लिये किसी को दस बार सोचना पड़ता।

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी के पास अब कोई चारा नहीं रह गया था कि वह वहाँ से घर वापस लौट जाये सो वह वहाँ से वापस लौट गयी और अपने घर चली गयी।

उसके बाद वह लड़की हैज के पत्तों और टहनियों के नीचे से निकल आयी और अपने घर की तरफ चली गयी।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ और बहिन उसको वहाँ ज़िन्दा देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयीं और उससे और ज़्यादा नफरत करने लगीं। वहाँ से लौटने के बाद वह अब और ज़्यादा होशियार और चतुर हो गयी थी। वह अब देखने में भी बहुत अच्छी लगने लगी थी। उसकी तरफ देखने में अब अच्छा लगता था।

पर फिर भी वह उनके साथ नहीं रह सकी। उन्होंने उसको सूअरों के रहने की जगह रहने को भेज दिया। अब वही उसका घर था सो उसने उसको खूब रगड़ रगड़ कर साफ किया और फिर वह नीली सन्दूकची खोली जो वह उस जादूगरनी के घर से अपनी मजदूरी के रूप में लायी थी।

वह यह देखना चाहती थी कि उसको उसकी मजदूरी के रूप में क्या मिला था। पर जैसे ही उसने उसका ताला खोला तो उसको तो उसके अन्दर इतना सारा सोना चाँदी और बहुत अच्छी अच्छी चीजें दिखायी दीं कि वे उसमें से बाहर निकलनी शुरू हो गयीं और उस सूअरों के घर की दीवारों पर लटकना शुरू हो गयीं। अब वह सूअर का घर तो किसी राजा के महल से भी शानदार लगने लगा।

जब उसकी सौतेली माँ और बहिन उसे वहाँ देखने आयीं तो वे तो आश्चर्य के मारे उछल ही पड़ीं और पूछने लगीं कि यह सब उसने कैसे बनाया।

लड़की बोली — "ओह तुम देख नहीं रहीं कि यह तो मेरी अच्छी मजदूरी का फल है। ओह वह कितना अच्छा परिवार था और उस परिवार की मालकिन भी कितनी अच्छी थी जिसकी मैंने सेवा की। तुमको उनके जैसा कहीं भी कोई भी नहीं मिल सकता।"

सो स्त्री की बेटी ने तुरन्त ही यह सोच लिया कि वह भी वहाँ जायेगी और उस मालकिन की सेवा करेगी। तो उसको भी ऐसी ही सोने की एक सन्दूकची मिल जायेगी।

वे दोनों बहिनें फिर से वहीं सूत कातने बैठीं। पर इस बार स्त्री की बेटी काँटे कातने बैठी और आदमी की बेटी रुई कातने बेठी। शर्त यह थी कि जिसका भी सूत पहले टूटा वह कुँए में जायेगा।

अब जैसा कि तुम सब समझ सकते हो कि स्त्री की बेटी का धागा पहले टूट गया। तो वह कुँए में चली गयी।

इस बार भी वैसा ही हुआ जैसे पहले हुआ था। वह कुँए की तली में गिर पड़ी पर उसको उस गिरने से कोई चोट नहीं आयी। वह तो वहाँ हरी हरी घास के मैदान में खड़ी थी।

वह कुछ दूर आगे चली तो वह एक हैज के पास आयी। हैज बोली — "ओ लड़की मेरे ऊपर बहुत जोर से मत चलना। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

स्त्री की बेटी ने सोचा "मैं इसकी परवाह क्यों करूँ।" सो वह उसके ऊपर से हो कर चली गयी जब तक कि वह सारी की सारी हैज कुचल नहीं गयी और कराहने नहीं लगी।

कुछ दूर और आगे जाने पर उसको एक गाय मिली। गाय उससे बोली — "मेहरबानी कर के मुझे दुहती जाओ। मेरे थन दूध के बोझ से फटे जा रहे हैं। मैं बाद में तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम जितना चाहे उसमें से उतना दूध पी लेना पर जितना बचे वह मेरे खुरों पर फेंक देना।"

उसने उस गाय को दुहा और तब तक उसका दूध पीती रही जब तक वह और दूध नहीं पी सकी। पर जब वह वहाँ से चली तो उसके पास गाय के खुरों पर डालने के लिये दूध बिल्कुल भी नहीं बचा था और जहाँ तक उस बालटी का सवाल था जिसमें उसने उसका दूध दुहा था वह उसने पहाड़ी के नीचे लुढ़का दी थी।

वह फिर से आगे चल दी। कुछ और दूर चलने के बाद उसको एक भेड़ मिला जो उसके साथ साथ अपने पीछे पीछे अपनी ऊन लटकाये चल रहा था।

भेड़ ने लड़की से कहा — "मेहरबानी कर के मेरी ऊन काट दो। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। ऊन काट कर तुम उसमें से जितनी चाहे उतनी ऊन ले लेना पर बाकी बची हुई ऊन मेरी गर्दन में लपेट देना।"

लड़की ने यह सब कर तो दिया पर उसने इसे इतनी लापरवाही से किया कि उसने बेचारे भेड़ के शरीर में से बड़े बड़े टुकड़े भी काट लिये और जहाँ तक ऊन का सवाल था वह तो उसकी सारी ऊन ले

कर चली गयी। उसकी गर्दन में बॉधने के लिये ज़रा सी भी ऊन नहीं छोड़ी।

आगे कुछ दूर चलने के बाद उसको एक सेब का पेड़ मिला जो फलों से भरपूर था और उसी की वजह से टेढ़ा भी खड़ा था।

सेब का पेड़ बोला — "मेहरबानी कर के मेरे पेड़ के सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखाऐं सीधी बढ़ सकें क्योंकि इस तरह से टेढ़े खड़े रहना बहुत मुश्किल काम है।

पर ज़रा ध्यान रखना कि फल तोड़ते समय मुझे बहुत ज़ोर से मत मारना। तुम चाहे जितने सेब खा लेना पर बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के चारों तरफ डाल देना। मैं फिर तुम्हारी सहायता करूँगा।"

लड़की ने उस पेड़ के सेब तोड़े तो पर उसने वही सेब तोड़े जो उसके सबसे पास थे। बाकी दूर लगे सेब तोड़ने के लिये उसने डंडे से पेड़ को बहुत ज़ोर से मारा। इससे उसके फल ही नहीं बल्कि कई शाखाऐं भी टूट गयीं।

फिर उसने खूब सारे सेब खाये जब तक उससे सेब और नहीं खाये गये। बाकी बचे हुए सेब उसने पेड़ के नीचे फेंक दिये और आगे चल दी।

काफी दूर जाने के बाद वह एक खेत के पास आ पहुँची जहॉ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी। वहॉ आ कर उसने उससे ठहरने के लिये जगह मॉगी तो उस जादूगरनी ने कहा कि उसको अब कोई

नौकरानी नहीं चाहिये क्योंकि उनमें से कोई भी नौकरानी उसके किसी काम की नहीं थीं।

या तो वे उसके लिये बहुत होशियार थीं या फिर उन्होंने उसको उसकी चीजों के साथ धोखा दिया था।

पर स्त्री की बेटी कहाँ मानने वाली थी उसको तो उस जादूगरनी के घर में काम करना ही था। सो जादूगरनी को उसे रखना ही पड़ा। उसने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह उसका काम देखेगी फिर उसको अगर उसका काम अच्छा लगा तो वह उसको पक्की तरह से रख लेगी।

जादूगरनी ने पहला काम उसको यह दिया कि उसको चलनी में पानी भर कर ला कर दे। सो वह कुँए के पास गयी और चलनी में पानी भरने की कोशिश करने लगी। वह जैसे ही चलनी में पानी भरती वह उसके छेदों में से बाहर निकल जाता।

तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

पर उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया बल्कि उनकी तरफ उसने इतनी मिट्टी फेंकी कि वे वहाँ से उड़ गयीं। इस तरह से वह उस चलनी में पानी नहीं भर सकी और उसको बिना पानी के ही घर जाना पड़ा।

इस तरह से बिना पानी लिये घर आने पर जादूगरनी ने उसको बहुत डॉटा।

फिर उसको गायों का घर साफ करने के लिये और उनका दूध दुहने के लिये भेजा गया। पर उसने तो ऐसे काम कभी किये नहीं थे सो उसने सोचा कि वह तो ऐसे काम करने के लिये बहुत अच्छी थी। फिर भी वह गायों के घर तक गयी।

पर जब वह वहॉ पहुॅची तो वहॉ उसको सिवाय एक भूसा उठाने वाले के और कुछ नहीं मिला जिससे वह वहॉ की सफाई कर सकती। और वह भी इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकी उससे काम तो वह कैसे करती।

चिड़ियों ने उससे भी वही कहा जो उन्होंने उसकी सौतेली बहिन से कहा था। उन्होंने उससे कहा कि वह झाड़ू ले कर केवल थोड़ा सा गोबर वहॉ से उठा दे और बाकी गोबर उसके पीछे पीछे उड़ जायेगा। पर उसने झाड़ू उठा कर चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

फिर वह उनका दूध दुहने गयी। गायें बहुत ही बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको दुहने के लिये छूती तो वे उसको लात मारतीं और धक्का मारतीं। वह अपनी बालटी में उनका केवल बहुत थोड़ा सा ही दूध निकाल पाती।

कि तभी चिड़ियों ने फिर गाया – "चिड़ियों के पीने के लिये लिये एक छोटी सी बूॅद दूध की एक छोटा सा खाना।"

पर उसने गायों को बहुत डॉटा और मारा। फिर उसके हाथ में जो कुछ आया उसने वही चिड़ियों की तरफ फेंक दिया। यह सब उसने कुछ इस तरह से किया कि देखने में वह सब बहुत खराब लग रहा था।

इसलिये वह इस बार भी गायों के घर को साफ करने और उनको दुहने के मामले में कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी। सो इस बार जब वह घर आयी तो उसको जादूगरनी की डॉट तो सहनी ही पड़ी साथ में उसको मार भी पड़ी।

बाद में उसको काले रंग की ऊन को सफेद करने के लिये भेजा गया पर उसमें भी वह कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी।

इसके बाद जादूगरनी अन्दर से तीन सन्दूकचियॉ निकाल कर लायी – एक लाल एक हरी और एक नीली और उससे बोली कि उसको उसकी सेवाओं की कोई जरूरत नहीं थी। पर उसने जो कुछ वहॉ काम किया था उसके बदले में वह उनमें से कोई भी सन्दूकची चुन सकती थी। जो भी उसको अच्छी लगे।

तभी छोटी चिड़ियों ने गाया – "न तो तुम लाल लो न तुम हरी लो। पर तुम नीली लो जिसमें तीन छोटे क्रास हैं। हमने क्योंकि उनके निशान देखे हैं इसलिये हमें मालूम हैं।"

उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उसने लाल वाली सन्दूकची चुन ली क्योंकि वह उसकी ऑखों को बहुत सुन्दर लग रही थी।

लाल सन्दूकची ले कर वह अपने घर चल दी। वह बहुत शान्ति से और आराम से घर चली गयी क्योंकि उसका पीछा करने वाला कोई नहीं था।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी माँ तो खुशी के मारे कूद कर उसके पास पहुँच गयी। दोनों ने मिल कर उस सन्दूकची को एक आतिशदान[37] पर रख दिया क्योंकि उन्होंने तो इसके बारे में कुछ और सोचा ही नहीं था कि उसमें सोने चाँदी के अलावा भी और कुछ हो सकता है।

वे तो बस यह सपना देख रहीं थीं कि उस सोने की सन्दूकची से अपना घर उस सूअर के घर जैसा सजा लेंगी। वहाँ जा कर उन्होंने उस सन्दूकची को खोला। लो जब उन्होंने उसको खोला तो उसमें से क्या निकला?

उसमें से तो मेंढक साँप निकल पड़े। और उससे भी बुरी बात यह कि जब भी वे मुँह खोलतीं उनके मुँह से या तो कोई मेंढक कूद कर बाहर आ जाता या फिर कोई साँप बाहर रेंग जाता। या फिर कई तरह के कीड़े बाहर निकल पड़ते। इस वजह से अब कोई उनके साथ ही नहीं रह पा रहा था।

[37] Translated for the word “Fireplace”. In cold places people used to light fire to keep their houses warm. This was called fireplace. There used to be a flat stone sheet over this place which could be used to keep something. See its picture above.

तो यह इनाम मिला उस लड़की को उस जादूगरनी के साथ काम करने का।

13 गाय का सिर[38]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के यूक्रेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

ओक्साना अपने पिता, अपनी सौतेली मॉ और अपनी सौतेली बहिन के साथ शहर के किनारे के एक छोटे से गॉव में रहती थी। ओक्साना की सौतेली मॉ ओक्साना को बिल्कुल नहीं चाहती थी वह बस अपनी बेटी ओलीना[39] को ही ज़्यादा प्यार करती थी।

अपने पिता की दूसरी शादी के जल्दी ही बाद ओक्साना को यह पता चल गया कि अब घर का सारा काम उसी के कन्धों पर आ पड़ा है जबकि ओलीना अपना सारा दिन आराम से गुजारती।

ओक्साना का पिता एक बहुत ही कम बोलने वाला आदमी था और अपनी पत्नी के सामने उसके खिलाफ नहीं बोल सकता था सो वह ओक्साना के लिये कुछ नहीं कर सकता था।

औक्साना ओलीना के पुराने कपड़े पहनती थी। ठंड में काम करते करते उसके हाथ लाल हो जाते थे और फट जाते थे जबकि ओलीना अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर पार्टियों में जाती रहती थी।

---

[38] Cow's Head – a folktale from Ukraine, Europe. Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/cows_head.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[39] Oksana and Olena – names of the two step sisters

इस तरह से ओलीना आलसी भी होती जा रही थी और बिगड़ती भी जा रही थी।

एक साल जब जाड़ों में बर्फ बहुत ज़्यादा पड़ रही थी तो ओक्साना के परिवार के पास पैसा खत्म हो गया। सो ओक्सना की सौतेली मॉ ने ओक्साना के पिता से कहा कि वह ओक्साना को कहीं भेज दे क्योंकि वे दो लड़कियों को एक साथ नहीं रख सकते थे।

न चाहते हुए भी ओक्साना का पिता ओक्साना को वहॉ से भेजने पर राजी हो गया। वह उसको जंगल के काफी अन्दर एक घर में ले गया और वहॉ छोड़ आया।

ओक्साना बहुत डरी हुई थी क्योंकि वह जंगल राक्षसों से भरा हुआ था। लेकिन ओक्साना जानती थी कि उसको क्या करना है। वह उस मकान में अपनी एक छोटी सी पोटली ले कर घुसी।

उसको वहॉ पर एक आग जलाने की जगह[40] मिल गयी, एक छोटी मेज दिखायी दे गयी और एक जंग लगा बर्तन मिल गया। ओक्साना ने अपनी डबल रोटी, चाकू और चीज़ का टुकड़ा जो उसके पिता ने उसको चलते समय दिया था एक तरफ को रख दिया।

उसने अपना कम्बल आग जलाने की जगह के पास तह कर के रख दिया। फिर उसने कुछ लकड़ियॉ इकट्ठी कीं और आग जलायी।

[40] Fireplace – where fire is burnt in winter to keep the house warm

ओक्साना जानती थी कि उसकी वह डबल रोटी और चीज़ सारे जाड़े तो चल नहीं पायेगी सो उसने पेड़ की पतली शाखाओं से एक जाल बनाया जिससे उसने एक जाड़े वाला खरगोश[41] पकड़ा।

उसने बर्फ खोद कर खाने के लिये कुछ जड़ें और बैरी[42] ढूँढी। जब तक अँधेरा हुआ उसने थोड़ा सा बर्फ पिघला कर पीने के लिये पानी भी बना लिया था।

सो ओक्साना ने आराम से खाया पिया और रात बिताने के लिये आग के पास लेट गयी। वह हवा के बहने की आवाज सुनती रही और यह सोचती रही कि वह जंगल से नहीं डरती।

आधी रात को दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। खट खट खट। उस अँधेरे मकान में वह आवाज गूँज गयी और ओक्साना अचानक ही जाग गयी।

उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसको लगा कि बाहर कहीं कोई राक्षस न हो। वह आवाज फिर आयी – खट खट खट। सुन कर उसने अपना सिर कम्बल में छिपा लिया और प्रार्थना करने लगी कि इस समय जो भी बाहर है वह वहाँ से चला जाये।

---

[41] Snow rabbit – it lives in cold climate

[42] Roots and Berries. See the picture of berries above.

खट खट खट। ओक्साना उठी। उसने पेड़ की एक शाख अपने हाथ में उठा ली और धीरे धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ी। घर की चिमनी से आती हुई हवा बड़ी अजीब सी आवाज कर रही थी।

उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था जैसे ही उसने बाहर झॉक कर देखा। फिर उसने नीचे देखा तो डर के मारे ओक्साना की एक ज़ोर की चीख निकल गयी और वह पीछे की तरफ हट गयी। डंडी उसके हाथ से छूट गयी।

वहॉ तो एक राक्षस खड़ा था – एक बुरी आत्मा। उसका कोई शरीर नहीं था। ओक्साना हकला कर बोली — "तुम कौन हो?"

वह बोला — "मैं गाय का सिर हूँ।"

ओक्साना ने फिर से देखा, हॉ वह तो सचमुच वही था। वह सिर भूरा था और उसके अजीब से सींग थे और डरावनी ऑखें थीं।

गाय के सिर ने पूछा — "मुझे बहुत ठंड लग रही है और भूख भी। क्या मैं तुम्हारी आग के पास सो सकता हूँ?" उसकी आवाज ठंडी और मरी हुई सी थी।

ओक्साना ने अपने डर को हटाया और बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

गाय का सिर बोला — "तुम मुझे दरवाजे से ऊपर उठाओ।"

ओक्साना ने वैसा ही किया।

"अब तुम मुझे आग के पास रख दो।"

अब ओक्साना का डर निकल गया था और उसके दिल में उस राक्षस के लिये दया पैदा हो गयी थी। उसने उस सिर को दरवाजे से ऊपर उठाया और उसको आग के पास रख दिया।

गाय का सिर फिर बोला — "मुझे भूख लगी है। मुझे कुछ खिला दो।"

ओक्साना ने अपने थोड़े से खाने की तरफ देखा। उसके पास जो सूप था वह उसके सुबह के नाश्ते के लिये था पर वह उसने उसे उस गाय के सिर को पिला दिया।

"अब मैं सोऊँगा।" राक्षस की आवाज में ओक्साना के लिये नम्रता की कोई भावना नहीं थी फिर भी ओक्साना ने गाय के सिर को जितने आराम से रख सकती थी रखने की कोशिश की।

उसने अपना कम्बल भी गाय के सिर को ओढ़ा दिया था और खुद वह अपना कोट पहने ही एक ठंडे कोने में सिकुड़ी सी सो गयी थी।

सुबह को जब वह उठी तो गाय का सिर तो वहाँ से चला गया था पर जहाँ वह सोया था वहाँ एक बहुत बड़ा बक्सा रखा था जो बहुत सुन्दर सुन्दर पोशाकों से भरा हुआ था। और उन पोशाकों के नीचे बहुत सारा सोना और बहुत सारे जवाहरात थे।

ओक्साना तो उस सबको देखते ही आश्चर्य में पड़ गयी।

तभी उसके कानों में अपने पिता की आवाज पड़ी — "बेटी, मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

ओक्साना अपने पिता की आवाज सुन कर बहुत खुश हुई और बक्सा भूल कर अपने पिता से लिपट गयी। वह बोली — "आइये पिता जी।"

उसके पिता ने उसकी सौतेली मॉ को किसी तरह इस बात पर मना लिया था कि वह ओक्साना को वापस घर ले आये। इसलिये वह ओक्साना को घर ले जाने के लिये आया था।

ओक्साना अपने पिता को घर के अन्दर ले गयी और बक्सा दिखाते हुए बोली — "देखिये पिता जी।" फिर उसने अपने पिता को सब समझाया कि पिछली रात उसके साथ क्या क्या हुआ था।

उसका पिता उसको घर वापस ले गया। अपने गॉव में उसके अपने दया के बर्ताव की वजह से बड़ी इज़्ज़त हुई। कई लड़के उससे शादी की इच्छा से आने लगे सो जल्दी ही उसकी शादी भी हो गयी।

उसका खजाना देख कर ओक्साना की सौतेली मॉ ने अपनी बेटी ओलीना को भी उस जंगल वाले मकान में भेजा और वहॉ एक रात गुजारने के लिये कहा। पर जब गाय का सिर वहॉ आया तो वह आलसी होने की वजह से उसकी सेवा नहीं कर सकी।

अगली सुबह उसके अपने कपड़े चिथड़ों में बदल चुके थे और जो कुछ उसके पास था वह भी सब मिट्टी में मिल गया था। पर ओक्साना काफी बड़ी उमर तक ज़िन्दा रही और खुशी से रही।

14 नीच सौतेली माँ[43]

एक बार की बात है कि एक सौतेली माँ अपनी सौतेली बेटी से बहुत नफरत करती थी क्योंकि वह उसकी अपनी बेटी से बहुत ज़्यादा सुन्दर थी। अपनी बेटी को वह अपने साथ ही ले कर आयी थी। धीरे धीरे उसका पिता भी उसको नफरत करने लगा। वह अपनी पत्नी को खुश करने के लिये उसको डाँटता और पीटता भी था।

एक दिन उसकी दूसरी पत्नी ने कहा — "तुम्हारी बेटी को कहीं दूर भेज देते हैं। अब उसको अपनी देखभाल अपने आप करने दो।"

इस पर पिता ने पूछा — "पर हम उसे कहाँ भेज देंगे। वह बेचारी लड़की अकेली कहाँ जायेगी।"

तो उसकी दूसरी पत्नी ने कहा — "अगर तुम उसको कहीं छोड़ कर नहीं आये तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगी। अच्छा हो कि तुम उसको कल ही कहीं बाहर छोड़ आओ। तुम उसे जंगल ले जा सकते हो फिर वहाँ उसे चुपके से उसे वहीं छोड़ कर आ सकते हो।"

उसने इस बात को इतनी बार कहा कि आदमी को उसकी बात माननी ही पड़ी। फिर भी उसने उससे कहा कि वह उसकी बेटी के

[43] The Wicked Stepmother. A tale from the book "Folktales of Serbia" by Madam Csedomille. 1876. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
"Die Stiefmutter und ihr Stiefkind" – Grimm No 34.

लिये रास्ते के लिये कुछ खाने के लिये तैयार कर दे ताकि वह अपनी यात्रा के पहले दिन ही भूखी न मर जाये।

इस पर अगले दिन सौतेली माँ ने उसके लिये एक केक बना दी और अगले दिन बहुत सुबह उस लड़की का पिता उसे ले कर दूर चल दिया। वह उसको बीच जंगल में ले गया वहाँ उसे छोड़ा और घर वापस लौट गया।

लड़की बेचारी अपने पिता का शाम तक इन्तजार करती रही। वह सारा दिन जंगल में जंगल से बाहर जाने का रास्ता ढूँढती रही पर वहाँ से बाहर निकलने का उसे कोई रास्ता नहीं मिला। जब रात हो गयी तो रात बिताने के लिये वह एक पेड़ पर चढ़ गयी कि कहीं ऐसा न हो कि रात को जंगली जानवर आ कर उसे खा जायें।

वहाँ तो वास्तव में सारी रात उस पेड़ के नीचे से भेड़ियों के चिल्लाने की आवाजें आती रही। इतनी आवाजें सुन कर तो वह लड़की इतना डर गयी कि वह बड़ी मुश्किल से अपने आपको पेड़ से गिरने से बचा पायी।

सुबह होने पर वह पेड़ से नीचे उतरी और फिर से इधर उधर घूमती रही ताकि उसे जंगल से बाहर निकलने का शायद कोई रास्ता मिल जाये। पर जितना ज़्यादा वह जंगल में घूमती जाती थी उतने ही घने जंगल में पहुँचती जाती थी। लगता था जैसे उस जंगल का कहीं कोई अन्त ही नहीं था।

शाम को जब वह फिर से रात को रुकने के लिये किसी पेड़ की तलाश में थी कि उसको जंगल में कोई चीज़ चमकती दिखायी दी। वह उधर की तरफ ही चल दी। उसने सोचा कि शायद वहाँ पर रात को रुकने की कोई जगह मिल जाये सो चलती चलती वह वहाँ तक आ गयी। वहाँ आ कर उसने देखा कि वहाँ तो एक बड़ा सा मकान खड़ा है।

मकान के दरवाजे खुले हुए थे सो वह अन्दर चली गयी। वहाँ उसने कई बड़े बड़े कमरे देखे तो वह उनमें चक्कर काटती रही। हर दूसरा कमरा पहले कमरों से ज़्यादा अच्छा था। एक कमरे में एक मेज पर मोमबत्ती जल रही थी।

उसको लगा कि यह घर तो लगता है डाकुओं का है। पर वह डरी नहीं क्योंकि उसका अपना तर्क यह था कि डाकुओं से तो अमीर लोग डरते हैं और उसके पास तो कुछ है ही नहीं। वे लोग कुछ पूछेंगे तो वह कह देगी कि वह उनके पास रोटी के लिये काम करने को तैयार है।

उसने अपने थैले में से केक निकाली खाने के पहले की प्रार्थना कही और उसे खाना शुरू कर दिया। जैसे ही वह उसे खाने वाली थी कि एक मुर्गा उस कमरे में आया और उसकी केक लेने के लिये उसकी मेज पर कूद कर बैठ गया।

लड़की ने केक के कुछ टुकड़े किये और उसमें से एक टुकड़े का चूरा कर के उसकी तरफ फेंक दिया।

उसके बाद एक कुत्ता आया और बड़े दोस्ताना अन्दाज में उसके पास आ कर बैठ गया। उसने उसके लिये भी अपनी केक से एक छोटा सा केक का टुकड़ा तोड़ा और खिला दिया। फिर उसको अपने घुटनों पर बिठा लिया और पुचकारा। इसके बाद एक बिल्ला भी आया तो लड़की ने उसे भी खिलाया।

काफी देर बाद लड़की ने बहुत ज़ोर की आवाज सुनी जैसे कोई जंगली जानवर चला आ रहा हो। वह तो उसे देख कर बहुत डर गयी जब उसने उसके कमरे में कदम रखा।

वह तो एक शेर था। पर शेर ने उसको देख कर अपनी पूँछ कुछ इस तरह से हिलायी कि उसको शेर पर दया आ गयी। उसने उसको भी केक का एक टुकड़ा खिलाया।

शेर ने उसके हाथ से केक खाया और उसका हाथ चाटने लगा जिससे लड़की का डर चला गया। उसने उसको प्यार से सहलाया और बाकी बचा केक भी उसको खिला दिया।

इसके बाद उसने अचानक ही बहुत सारे हथियारों की आवाज सुनी और यह देख कर तो वह बेहोश सी हो गयी जब उसने देखा कि कोई भालू की खाल पहने उस कमरे के अन्दर आया।

उसको देखते ही मुर्गा कुत्ता बिल्ला शेर सभी बहुत खुश होते हुए उससे मिलने चल दिये और वहाँ पहुँच कर उसके चारों तरफ घूमने लगे।

लड़की बेचारी को तो यह जानवर बहुत ही अजीब लगा। उसको लगा कि वह अभी अभी उसके ऊपर कूद कर उसे मार देगा।

पर उस डरावनी चीज़ ने अपनी भालू वाली खाल जिसने उसको सिर से पैर तक ढक रखा था उतार कर रख दिया। अब क्या था अब तो वह कमरा उस खाल के नीचे पहने उसके सुनहरे कपड़ों से चमकने लगा।

जब उसने देखा कि उसके सामने तो एक बहुत सुन्दर नौजवान चमकते कपड़े पहने खड़ा है तो वह लड़की तो उसको देखते ही बेहोश सी हो गयी।

वह उसके पास तक आया और बोला — "प्रिये डरो नहीं। मैं कोई बुरा आदमी नहीं हूँ। मैं एक राजा का बेटा हूँ और जब भी मुझे शिकार खेलना होता है तो मैं यहाँ आ जाता हूँ। मैं यह भालू की खाल पहन कर यहाँ आता हूँ ताकि मुझे कोई पहचान न ले।

जो मुझे देखते हैं वे यह समझते हैं कि मैं कोई भूत हूँ और मुझसे दूर भाग जाते हैं। कोई इस मकान में आने की हिम्मत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह यह जानता है कि मैं यहाँ अक्सर ही आता रहता हूँ।

तुम पहली इन्सान हो जिसने इस महल में आने की हिम्मत की है। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं भूत नहीं हूँ।"

तब उसने उसे बताया कि उसने न तो उसके बारे में और न ही कभी उसके इस मकान के बारे में कुछ सुना था। उसकी सौतेली माँ ने तो बस उसको घर से बाहर निकाल दिया था। और फिर जो कुछ भी उसके साथ घटा था वह सब उसने उसको बता दिया।

जब राजकुमार ने उस लड़की का हाल सुना तो उसको उस पर बहुत दया आयी। दुखी हो कर वह बोला — "लगता है कि तुम्हारी सौतेली माँ तुमसे बहुत ज़्यादा नफरत करती है पर देखो भगवान तुम्हें बहुत प्यार करता है। अगर तुम राजी हो तो मैं तुमसे शादी करने को तैयार हूँ। मुझसे शादी करोगी?"

लड़की बोली "हाँ।" अगले दिन वह उसको अपने पिता के महल ले गया और वहाँ उससे शादी कर ली।

कुछ समय बाद लड़की ने राजकुमार से विनती की कि वह अपने पिता को देखने जाना चाहती है। राजकुमार ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। उसने बहुत सारा सोने का गहना पहना और अपने पिता के घर चली गयी।

इत्तफाक से उसका पिता घर पर नहीं था। सौतेली माँ उसको घर में आता देख कर बहुत डर गयी कि कहीं ऐसा न हो कि वह उससे बदला लेने आयी हो।

सो वह जल्दी जल्दी उसका घर में स्वागत करने के लिये आगे बढ़ी और बोली — "देख न। वह मैं थी जिसने तुझे खुशी के रास्ते पर भेजा।"

सौतेली बेटी ने अपनी सौतेली मॉ को चूमा और अपनी सौतेली बहिन को गले लगाया और बोली कि उसको बहुत दुख था कि वह अपने पिता को घर पर नहीं देख पायी। जाते समय उसने अपनी सौतेली मॉ को बहुत सारे पैसे दिये और चली गयी।

जब वह लड़की चली गयी तो सौतेली मॉ ने बड़े ज़ोर से अपनी मुट्ठी हिलायी और चिल्लायी — "ज़रा रुक तो सही। तू अकेली ही नहीं है जो इतने अच्छ कपड़े पहने और इतनी अच्छी तरह से सजे। कल को मैं अपनी बेटी को भी तेरे पीछे पीछे वहॉ भेजूँगी।"

रात को जब उसका पति घर आया तो उसने उस दिन दिन में क्या हुआ उसको सब बता कर उससे कहा — "क्या यह ठीक नहीं होगा कि हम मेरी बेटी को भी उसकी किस्मत आजमाने के लिये जंगल भेज दें। क्योंकि तुम्हारी बेटी जिसको हमने जंगल भेजा था अभी तक तो वापस नहीं आयी पर वह आज ही वापस आयी तो सोने से चमकती हुई।"

आदमी ने एक लम्बी सॉस भरी और तैयार हो गया। अगले दिन मॉ ने अपनी बेटी के लिये बहुत सारी केक बना कर तैयार कर दीं। भुना हुआ मॉस तैयार कर दिया। और यह सब दे कर उसको उसके पिता के साथ जंगल भेज दिया।

पिता उसको जंगल में बहुत दूर तक ले गया जैसे वह अपनी बेटी को ले गया था और वहॉ उसे छोड़ कर चला आया। जब उसे पता चला कि उसका पिता उसे छोड़ कर चला गया और वापस नहीं

आया तो उसने जंगल में जंगल से बाहर जाने का रास्ता ढूँढना शुरू किया। जल्दी ही उसको भी वही मकान दिखायी दे गया जिसमें उसकी सौतेली बहिन गयी थी।

वह उस मकान में घुस गयी। उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं था सो उसने अन्दर से उसका दरवाजा अन्दर से यह कहते हुए बन्द कर लिया कि "अब अगर भगवान खुद भी यहाँ आयें तो मैं उनके लिये दरवाजा नहीं खोलूँगी।"

फिर उसने अपना थैला खोला। अपनी केक और भुना हुआ मॉस निकाला और खाना शुरू कर दिया। जब वह खा रही थी तो मुर्गा कुत्ता बिल्ला वहाँ अचानक से आ गये और इस आशा में उसके पास प्यार से खेलने लगे कि वह उन्हें कुछ खाने के लिये दे देगी।

पर वह उनको देख कर बहुत गुस्सा हो गयी और बोली — "तुम सबको शैतान उठा कर ले जाये। यह खाना तो मेरे अपने लिये ही काफी नहीं है तो फिर तुम क्या सोचते हो कि मैं इसमें से तुमको कुछ दूँगी।" कह कर उसने उनको मारना शुरू कर दिया।

इस पर कुत्ता भौंकने लगा तो शेर वहाँ दहाड़ता हुआ आ गया। उसने लड़की को पकड़ लिया और मार कर उसे खा गया।

अगले दिन राजकुमार अपनी पत्नी के साथ वहाँ शिकार करने के लिये आया तो उसकी पत्नी ने अपनी बहिन की पोशाक पहचान ली। उसने उसके शरीर के छोटे छोटे टुकड़े इकट्ठे किये और अपनी सौतेली माँ के पास ले गयी।

इस बार उसको अपना पिता भी घर में मिल गया। वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसकी बेटी की शादी एक राजकुमार से हो गयी थी।

पर जब उसने सुना कि उसकी दूसरी पत्नी की बेटी मर गयी तो उसे बहुत दुख हुआ। फिर भी वह बोला — "उसको भगवान के हाथों यही मिलना चाहिये था क्योंकि वह तुझे बेकार में ही नफरत करती थी। वह वहाँ कुँए पर है मैं जा कर उसे बताता हूँ।"

जब सौतेली माँ ने यह सुना कि उसकी बेटी के साथ यह क्या हो गया है तो उसने अपने पति से कहा — "मैं तुम्हारी बेटी को बिल्कुल सहन नहीं कर सकती। मैं तो उसकी तरफ देख भी नहीं सकती। हमको उसे और उसके पति को मार देना चाहिये। अगर तुम मुझे इसकी इजाज़त नहीं दोगे तो मैं इसी कुँए में कूद कर अपनी जान दे दूँगी।"

पति बोला — "मैं अपनी बेटी को खुद नहीं मार सकता।"

यह सुन कर वह चिल्लायी — "ठीक है अगर तुम उसे मार नहीं सकते और मैं उसे सहन नहीं कर सकती तो...।"

कह कर वह कुँए में कूद गयी।

List of Stories of “Copy But With Intelligence-1”

1. A Bird Steals Iyawo's Baby
2. Orphan Girl
3. Two Sisters and an Old Man
4. The Magic Wand
5. The Flute
6. Chinye
7. Anansi and the Feeding Pot
8. Magical Cucumbers
9. The Jackal and the Wolf
10. Sunday Seven
11. The Candyman
12. The Monkey's Drum
13. The Island of the Sun
14. Into the Mouth of the Lion
15. Woe Bogotir
16. Sorrow
17. Creative Division
18. Beer and Bread
19. The Bald Wife
20. The Pumpkin Seeds
21. What We Will Plant We Will Eat
22. Hwan and Dang

List of Stories of “Copy But With Intelligence-2”

1. The Beggar and the Bread
2. Half Rooster
3. The Two Brothers
4. Donald and His Neighbors
5. Story of Cats
6. The Thirteen Robbers
7. The Two Sisters
8. The Two Muleteers
9. The Two Humpbacks
10. Justice or Injustice? Which is Best?
11. The Boy and the Water Sprite
12. The Two Step Sisters
13. Cow's Head
14. The Wicked Stepmother

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से भी अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022